सूचीपत्र प्रेमबानी चौथी जिल्द

टेक		सफा
गुरु प्यारे का धर बिश्वास मन से जूझूँगी	..	१६१
„ „ का ले बल हाथ करम पछाड़ूँगी	...	१६१
„ „ की आरत सार गाऊँ उमँग २	.	१६१
„ „ के नित गुन गाय प्रेम जगाऊँगी	...	१६१
„ „ चरन पर आज मनुवाँ वारूँगी	..	१६०
गुरु की धर हिये में परतीत	..	१४६
घट में दरशन दीजिये मेरे राधास्वामी	.	६१
चरन गुरु दम २ हिरदे धार	.	१८८
चलो २ घर घट पुकारे	.	१८३
चलोरी सखी आज गगनपुरी	.	३६
चुपके २ बैठ कर करो नाम की याद		१८२
चेतोरे घर घाट सम्हारो	..	५५
चेतोरे जग काम न आवे	.	५३
जगत जीव सब होली पूजैं	.	११४
जगत तज गुरु चरनन में भाज	...	१८६
जगत भोग मोहि नेक न भावैं	...	८७
जगत से मन को तोड चलो	...	१८८
जागोरे यहाँ कब लग साना	..	५६
जुड मिल के हंस सारे दर्शन को गुर	...	१३
जैसे बने तैसे करो कमाई	..	१८८
जो मेरे प्रीतम से प्रीत करे	...	११२
झूलत घट में सुरत हिंडोला	...	१७२
तुम अबही गुर से मिलो जगत की		७१
तुम अबही गुरु सँग धाओ बहुर	.	७०
तुम अबही गुरु सँग रलो। हिये में प्रेम	.	७१
तुम अबही बिरह जगाय शब्द में सुरत	.	७२
तुम अबही मन को माँजो बहुर क्या	.	७०
तुम अबही सतसँग धारो बहुर नहिं	.	७१
तुम जीते सुरत चढ़ावो मुए पर क्या	.	६६
दरस आज दीजिये	.	१६१
धन २ राधास्वामी गाय रहूँगी	..	१७८

टेक		सफा

राधास्वामी दयाल की दया

राधास्वामी सहाय

प्रेमबानी चौथी जिल्द

गज़ल १

आज सतगुर की सरन
भाग से मैंने पाई ।
शब्द धुन बाज रही
चाँदनी घट में छाई ॥ १ ॥
कर्म और धर्म भरम
जान के सब छोड़ दिये ।
टेक पिछलों की तजी
प्रेम गुरू में लाई ॥ २ ॥
सुन के सतगुर के बचन
पिया अमी रस सारा ।
बैठ सतसंग में
परतीत हिये में आई ॥ ३ ॥

गुरु से ले शब्द का
उपदेश किया अभ्यासा ।
घंटा और संख सुने
जोत लखी नभ जाई ॥ ४ ॥
आगे चढ़ करके सुनी
तिरकुटी मैं धुन मिरदंग ।
सुन मैं हँसन से मिली
रागनी नइ नइ गाई ॥ ५ ॥
संग सतगुर के चली
जाय मिली सोहंग से ।
सतपुरुष मेहर करी
बीन की धुन सुनवाई ॥ ६ ॥
लख अलख आगे अगम
लोक का निरखा नूरा ।
राधास्वामी का दरश पाय
चरन मैं धाई ॥ ७ ॥

गज़ल २

आज सतगुर के चरन मैं
तु लगा ले नेहरा ॥ टेक ॥

शौक़ के साथ करो
चेत के सत संग उनका ।
मेहर से उनके तेरा
छूटे चौरासी फेरा ॥ १ ॥

चूके मत प्यारी कहन
मान ले हित कर मेरी ।
माया और काल ने यहाँ
डाला है भारी घेरा ॥ २ ॥

शब्द उपदेश गुरू से ले
कमाओ निस दिन ।
चालो घर की तरफ़
अब छोड़ के मेरा तेरा ॥ ३ ॥

राधास्वामी की सरन
धार ले दृढ़ कर मन में ।
वे करें मेहर तेरा
पार लगावें बेड़ा ॥ ४ ॥

गज़ल ३

आज मम भाग जगे
गुरु सतसंग आय मिली ॥टेक॥

सुनके सतगुरु के बचन
हो गई मैं आज निहाल।
संग मैं प्रेमी जनों के
मैं मगन होय रली ॥ १ ॥
भेद सतगुरु ने दिया
ऊँचे से ऊँचे देश ।
और मत जितने हैं
उनका रहा सिद्धान्त तली ॥२॥
शब्द घटघट में रहा बोल
सुनो दिन और रात।
भाग बड़ वह है जो
सुनता है उसे चितसे अली ॥३॥
ध्यान गुरु आज सम्हालो
सुनो धुन को घट में।
श्याम द्वारे के परे नभ में
लखो जोत बली ॥ ४ ॥
तिरकुटी जाय मिला
अद्भुत दर्शन गुरुका।

माया और काल की ताक़त
यहाँ सब आज गली ॥
सुन्न के पार भँवर में
गई सूरत चढ़ कर ।
मुरली और बीन सुनी
सत्त पुरुष पास चली ॥६॥
गुरु से ले भेद चली
आगे को सूरत प्यारी ।
राधास्वामी का दरश पाय के
धुर धाम चली ॥ ७ ॥

———०———

गज़ल ४

ाज प्यारी तू समझ सोचके
कर काम अपना ॥ टेक ॥
क्यों पचो दुनिया में
यह देश तुम्हारा नाहीं ।
मिलके सतगुरु से करो
खोज भला धाम अपना ॥१॥
तेरा हितकारी नहीं
दुनिया में गुरु सम कोई ।

वे जतावैंगे तुझे मेहर से
निज नाम अपना ॥ २ ॥

शब्द का भेद जुगत
देवैंगे सतगुर तुमको ।
नेम से करना तुम अभ्यास
सुबह शाम अपना ॥ ३ ॥

राधास्वामी की सरन
धार के चलना घर को ।
उनके चरन अंब से तुम
नित्त भरो जाम अपना ॥४॥

—०—

गज़ल ५

आज आनंद रहा
मौज से चहुँ दिस छाई ।
राधास्वामी की रहे
सब मिल महिमा गाई ॥ १ ॥

मेहर से गुर के मिला ऐसा
सुहावन संयोग ।
खुश हुए देख के यह औसर
सज्जन भाई ॥ २ ॥

शादियाने के लगे बाजे
चहूं दिस बजने ।
राग और रागनी सुर संग
उमंग कर गाई ॥ ३ ॥
हर तरफ़ नारे ख़ुशी के
आवाज़
लगे करने गुंजार ।
अर्श ने गरज गरज बूँद
अमी बरसाई ॥ ४ ॥
उमँग उमँग हर कोई देता है
मुबारकबादी ।
राधास्वामी रहँ निज मेहर से
नित प्रति सहाई ॥ ५ ॥

ग़ज़ल ६

आज हंगामये शादी का गरम
हो रहा देखो हरजा ।
राधास्वामी की दया का
करो सब शुक्र अदा ॥ १ ॥
हंस और हंसनी ख़ुश होके
वधाई देते ।

अर्श से भी चली आती है
ख़ुशी की यह सदा ॥ २ ॥
राधास्वामी की दया से
यह मुबारक जोड़ा ।
ख़ुश रहे याद में चरनों के
करे मन को फ़िदा ॥ ३ ॥

—o—

गज़ल ७

आज गुर प्यारे के चरनों में झलकती है
अजब मेंहदी की लाली ॥ टेक ॥
देखो गुर प्यारे के चरनों में
अजब मेंहदी की लाली ।
हाथ भी सुर्ख़ हैं और मुखड़े की
छबि देखी निराली ॥ १ ॥
हार और फूल लिये आती हैं
सखियाँ घर से ।
मेंहदी हाथों में लगाती हैं
सरब सूरत वाली ॥ २ ॥
लाल रँग छाय रहा गुर के
महल में चहुँ दिस ।

देख परकाश तले रह गई
माया काली ॥ ३ ॥
सुर्त बन्नी का मिला भाग से
गुर बन्ने से जोड़ा ।
राधास्वामी की दया पाय के
निज घर चाली ॥ ४ ॥

—— ० ——

गज़ल ८

आज धुन अनहद बाज रही है ।
अधर चढ़ सूरत गाज रही है ॥ १ ॥
देख घट जगमग जोत उजार ।
मगन होय भाग सराह रही है ॥ २ ॥
सुनत धुन गगना ओअंकार ।
रूप गुरु अद्भुत निरख रही है ॥ ३ ॥
सुन्न में खिली चाँदनी सार ।
ररंग धुन अक्षर गाज रही है ॥ ४ ॥
बाँसरी बीन की परखत धार ।
दरश राधास्वामी झाँक रही है ॥ ५ ॥

—— ० ——

ग़ज़ल ६

न जग में चैन और न स्वर्ग सुख है
न ब्रह्म पद में अमर अनंदा ।
जहाँ तलक हैगा माया घेरा
वहाँ तलक हैगा जम का फंदा ॥ १ ॥
पड़े भटकते हैं जग में सारे
पदार्थ और इन्द्रियों के मारे ।
वहाँ से अब उनको कौन उबारे
हुआ है अति करके जीव गंदा ॥ २ ॥
पुरानी टेकों में अटक रहे हैं ।
करम धरम में भटक रहे हैं ।
सुरत शब्द की जुगत न मानें
हुआ है सारा ही जगत अंधा ॥ ३ ॥
मिलें न जब लग गुरू पियारे
छुटें न मन के बिकार भारे ।
न सुर्त चीन्हें न शब्द सम्हारे
रहे है बंधन में जीव बँधा ॥ ४ ॥

बिरह जगा गुर चरन मैं धाओ
कर उन्का सतसंग घर के भाओ ।
उलट के धुन मैं सुरत लगाओ
पिंड का चढ़ के नाका खंडा ॥ ५ ॥
गुरू मेहर से सुरत चढ़ावैं
सुन्न की धुन अजब सुनावैं ।
करम का लेखा तेरा चुकावैं
लखावैं निज घट की तोहि संधा ॥ ६ ॥
वहाँ से भी फिर अधर चढ़ावैं
अलख अगम सत की धुन् सुनावैं ।
पियारे राधास्वामी से मिलावैं
दिलावैं भक्ती का तुझको झंडा ॥ ७ ॥

———•———

गज़ल १०

लगे हैं सतगुर मुझे पियारे
कर उन्का सतसंग शब्द धारे ।
छुटे हैं मन् के बिकार सारे
कहूं मैं कैसे गुरू की गतियाँ ॥ १ ॥

सुरत शब्द मैं लगाऊँ दम्दम्
सुनूँ मगन होय धुनों की झम्झम् ।
होत सब दूर मन् की हम्हम्
सुनैं तीन ऐसी घट मैं बतियाँ ॥ २ ॥
बढ़त पिरेम् और पिरीत दिन् दिन्
होत मन से सुरत भिन् भिन् ।
गावती गुर की महिमाँ छिन् छिन् ।
रहत नित गुर चरन मैं रतियाँ ॥ ३ ॥
जगत के जीव हैं भागी सारे
फिरैं हैं मन इन्द्रियाँ के मारे ।
जाल से उनको को निकारे
सुनैं न चित्त देके त मतियाँ ॥ ४ ॥
जगा है मेरा पार भागा
चरन मैं राधास्वामी न लागा ।
गायें सब जीव माया रागा
रहे हैं थक मग मैं जोगी जतियाँ ॥ ५ ॥

गज़ल ११

मन् की मत मान के पछताओगे ।

नज़रे मेहर से गिर जाओगे ॥ १ ॥
भूलो मत दुनिया में रहना हुशियार ।
ाल के द्वारे पर टकराओगे ॥ २ ॥
करनी का अपने क्या दोगे जवाब ।
धर्म के सामने चकराओगे ॥ ३ ॥
पकड़ो सतगुरु के चरन जल्दी से ।
रक्षा हो जावेगी जो
उनकी सरन आ ोगे ॥ ४ ॥
जो न मानोगे बचन काल करेगा सख़्ती ।
देख जमदूतों को घबरा ोगे ॥ ५ ॥
ख़्त दुख भोगोगे चौरासी में ।
दामन पना जो कहीं
माया को पकड़ाओगे ॥ ६ ॥
राधास्वामी का मिर नाम हिये से पने ।
छिन में सब दुव ों से बच जा ोगे ॥७॥

ग़ज़ल १२

जुड़ मिल के हंस ारे,

दर्शन को गुरु के आये ।
बँगला अजब बनाया
सोभा कही न जाये ॥ १ ॥
जब आरती सँवारी हुई धूमधाम भारी ।
निज भाग सब सरावत्
औसर अधिक सुहाये ॥ २ ॥
सब मिल् के शब्द गावत्
भर भर पिरेम लावत ।
नइ नइ उमँग जगावत
चहुँदिस हरष समाये ॥ ३ ॥
घंट और संख गाजैं, मिरदंग ढोल बाजैं ।
सारँग सितार बीना
धुन बाँसुरी जगाये ॥ ४ ॥
हुये गुर दयाल परशन
सब को लगाया चरनन ।
वारत रहे हैं तन मन
राधास्वामी ओट आये ॥ ५ ॥

—:o:—

भाग २

मसनवी १

करूँ संतमत का मैं थोड़ा बयाँ।
वही सत्तमत हैगा अंदर जहाँ ॥ १ ॥
उसी को कहँ राधास्वामी पंथ सार।
होवे जिस्से जीवों का सच्चा उधार ॥२॥
परे सब के है कुल्ल मालिक का धाम।
परम पुर्ष राधास्वामी है उनका नाम ॥३॥
यही नाम ज़ाती है असली निदा।
होत जिसकी धुन घट में सबके सदा ॥४॥
जो गावेगा यह नाम धर कर के प्यार।
उसी जीव का होगा सच्चा उधार ॥ ५ ॥
मगर भेद भी जान्ना है ज़रूर।
बिना भेद कारज न होवेगा पूर ॥ ६ ॥
उठी स्वामी चरनों से इक आदि धार।
वही कुल्ल रचना की करतार यार ॥७॥
उसी आदि धारा का राधा है नाम।
उसी से सरैं सब के कारज तमाम ॥८॥

जहाँ से वह धारा निकसती भई ।
वही आदि स्वामी है सब का सही ॥९॥
उतर कर के वह धार ठहरी जहाँ ।
गम लोक की हुई रचना वहाँ ॥१०॥
अगम लोक का भारी मंडल बँधा ।
वही कुल्ल रचना का घेरा हु ा ॥ ११ ॥
हुई जिस . दर उसके रचना तले ।
वह इ गोशे में उसके निस दिन पले ॥१२॥
अगम की हुई जब ि रचना तमाम ।
उठी वहाँ से फिर एक धारा अगाम ॥१३॥
उतर करके नीचे किया बास ाय ।
लख लोक की वहाँ रचना रचाय ॥१४॥
बँधा उसका मंडल बदस्तूर ाय ।
वहाँ से उतर धार तपुर रचाय ॥१५॥
हु ा सतपुरुष का वह सतलोक धाम ।
हुई गिर्द हंसों की रचना तमाम ॥ १६ ॥
जुदे दीप हंसों के पैदा किये ।
पुरुष का दरश कर मगन सब हुए ॥१७॥

हुआ सत्त रचना का यहँ तक ज़हूर ।
नहीं जहाँ माया नहीं काल कूर ॥१८॥
नहीं कोइ आसा नहीं कोइ कार ।
दरश पुर्ष का और अमीं का अहार ॥१९॥
करें मिल के सब ऐश आनंद सार ।
नहीं काल कष्ट और नहीं कर्म भार ॥२०॥
बहुत काल तक ऐसी रचना रही ।
वही देश सत्त और आनंदमई ॥ २१ ॥
उठी नीचे सतपुर से इक श्याम धार ।
उतर कर किया उसने बहुतक पसार ॥२२॥
पुरुष सेव वह नित्त करती रही ।
वले* मन में कुछ चाह धरती रही ॥२३॥
किया उसने इस तरह इज़हार हाल ।
कि हे सतपुरुष मेरे दाता दयाल ॥२४॥
जुदे देश में राज दीजे मुझे ।
सुरत अंश का बीज दीजे मुझे ॥ २५ ॥
मुझे यहाँ का रहना सुहाता नहीं ।

* पर ।

तुम्हारा मुझे देश भाता नहीं ॥ २६ ॥
यह सुनकर दिया पुर्ष ने अस जवाब ।
निकल जाओ तू यहाँ से ख़ाना ख़राब ॥२७॥
तले देश में जाके रचना करो ।
वहाँ बैठ कर राज अपना करो ॥ २८ ॥
निरंजन हुआ नाम उस धार का ।
हुआ काल का अंग उस धार का ॥२९॥
पुरुष ने लई दूसरी धार उपाय ।
हुआ पीत रंग आद्या नाम ताय ॥३०॥
हुकम से यह धारा उतारी गई ।
निरंजन के सँग जाय मिलती भई ॥३१॥
हुए सुन में पुर्ष और परकिर्त यह ।
हुए माया और ब्रह्म त्रिकुटी में यह ॥३२॥
सहस दल कँवल जाय कीन्हा निवास ।
हुआ तीन गुन का यहाँ से उजास ॥३३॥
धरा आद्या ने यहाँ जोत रूप ।
निरंजन ने धारा शियामी सरूप ॥३४॥
प्रथम ब्रह्म सृष्टी इन्हों ने करी ।

हुई फिर त्रिलोकी की रचना खड़ी ॥३५॥
निरंजन ने धारा पुरुष का धियान ।
हुई सारी रचना की जोती प्रधान ॥३६॥
हुये तीन गुन उसके नायब यहाँ ।
हुई उन से फिर सारी रचना अयाँ ॥३७॥
परघट

मसनवी २

करूँ पहिले महिमाँ गुरू की बयान ।
किया जिसने रहमत से पैदा जहान ॥१॥
परम गुर परम पुर्ष राधास्वामी नाम ।
अजब हैरतो हैरत है उनका धाम ॥२॥
लिया मुझ को चरनों में अपने लगा ।
सुरत शब्द मारग का दीन्हा पता ॥३॥
दया से जो संजोग पैदा किया ।
मेहर का रहे हाथ उस सँग लगा ॥४॥
जपूँ चित्त से नित्त राधास्वामी नाम ।
पाऊँ मेहर से एक दिन आदि धाम ॥५॥

मसनवी ३

अहो मेरे सतगुरु हो मेरी जान ।
अहो मेरे प्यारे हो मेरे प्रान ॥ १ ॥
नज़र मेहर की मुझ पै अब कीजिये ।
मुझे अब के जम से छुड़ा लीजिये ॥ २ ॥
निकालो मुझे काल के जाल से ।
बचा लेव माया के जंजाल से ॥ ३ ॥
तड़पता हूँ दर्शन को दिन रात मैं ।
सहूँ दुक्ख मन इंदरी ाथ मैं ॥ ४ ॥
जगत भोग देवैं झकोले सदा ।
पंच दूत फोड़ैं फफोले जुदा ॥ ५ ॥
बिना दर्श तुम्हरे बने कैसे काम ।
मेहर बिन करे कौन मेरी सहाम ॥ ६ ॥
सुनो बीनती मेरी दाता दयाल ।
दरश दे करो आज मुझको निहाल ॥७॥
जो चाहो करो मुझ पै छिन मैं दया ।
नहीं कुछ कठिन तुम्हरे आगे मया ॥८॥

मेरे वास्ते अब हुए क्यौं कठोर ।
मैं कुरबान जाउँ तुम पै हे बंदीछोड़ ॥९॥
सदा से तुम्हारा दयालू है नाम ।
करो क्यौं नहीं मेरा अब पूरा काम ॥१०॥
चरन में करूँ बीनती बार बार ।
सुनो हे दयाल मेरी जल्दी पुकार ॥११॥
दरश देके सूरत चढ़ा दीजिये ।
मुझे रस भरी धुन सुना दीजिये ॥१२॥
मिटाओ मेरे अब सभी दुक्ख साल ।
करो मुझको निरभय हे दाता दयाल ॥१३॥
सरन में पड़ा तुम्हरे दुनिया से भाज ।
मेरे काज की अब है तुम ही को लाज ॥१४॥
तुम्हारा हि हूँ जैसा तैसा कपूत ।
बना लीजिये मुझको अपना सपूत ॥१५॥
सरापा भरा हूँगा मैं खोट से ।
बचाओ मुझे अपनी अब ओट दे ॥१६॥
करो राधास्वामी मेहर की निगाह ।
लेवो मुझको अब जैसे तैसे निबाह ॥१७॥

बिना तुम चरन कोइ दीखे न ठौर ।
बिना तुम सहाई नहीं कोइ और ॥१८॥
मैं बालक पड़ा हूँ तुम्हारी सरन ।
सम्हालो दिखाओ मुझे निज चरन ॥१९॥
बिरह में रहूँ मैं तपत रात दिन ।
दरश बिन नहीं चैन मौंहिं एक खिन ॥२०॥
गुनाहों से अपने मैं शरमिंदा हूँ ।
छिमा कर छिमा मैं तेरा बंदा हूँ ॥२१॥
नहीं बनते मुझ से जो पाप और क़सूर ।
छिमा की तेरी होती फिर क्या ज़रूर ॥२२॥
मैं नालायक़ हूँ इस में कुछ शक नहीं ।
दया जो करे प्यार अचरज नहीं ॥ २३ ॥
क़सूरों को बख़्शो मेरे हे दयाल ।
ग़रीबी पै मेरे धरो अब ख़याल ॥२४॥
दया के भरोसे बने सब क़सूर ।
मेहर से देओ बख़्श आली हज़ूर ॥२५॥
मैं तुम्हरा हूँ और तुम हो मेरे सही ।
पिता पुत्र का नाता पूरा यही ॥ २६ ॥

पिता तुम हो और मैं हूँ बालक समान।
करो मेहर दीन और निबल मोहिं जान ॥२७
लगाया जिसे तुमने चरनौं के साथ।
सम्हाला उसे मेहर से देके हाथ ॥ २८॥
करो जब कि तुम निन्दकौं का उधार।
मुझे कैसे छोड़ोगे अब नौ के वार ॥२९॥
मेहर माँगूँ फिर मेहर माँगूँ दयार।
लेवो प्यारे राधास्वामी जल्दी उबार ॥३०॥

बचन २१

भाग १

शब्द १

आज सतसंग गुरू का कीजे।
दीखे घट बिमल बिलासा ॥ टेक ॥
यह जगत जाल दुखदाई।
क्यौं या में बैस बिताई ॥
ले सतगुरू की सरनाई।
धर राधास्वामी चरनन आसा ॥ १ ॥

गुर बचन चित्त में धरना ।
सुत शब्द कमाई करना ॥
मन माया से नित लड़ना ।
तब देखे अजब तमाशा ॥ २ ॥
गुर चरनन प्रीत बढ़ाना ।
मन सूरत अधर चढ़ाना ॥
राधास्वामी सरन समाना ।
तब पावे निज घर बासा ॥ ३ ॥
गुर दया संग ले भाई ।
गगना में पहुँची धाई ॥
फिर सत्तनाम पद पाई ।
किया राधास्वामी चरन निवासा ॥ ४ ॥

—:o:—

शब्द २

आज मेघा रिम झिम बरसे ।
हिये पिया की पीर सतावे ॥ टेक ॥
पिया छाय रहे परदेसा ।
मैं पड़ी काल के देशा ॥

मोहिँ निस दिन यही रे अँदेसा ।
कोइ पिया से आन मिलावे ॥ १ ॥
पपिहा जब पिउ पिउ गावे ।
मोहिँ पिया प्यारे की याद आवे ॥
बिरह अगिन भड़क भड़कावे ।
पिया बिन को तपन बुझावे ॥ २ ॥
सतगुर हितकारी मिलिया ।
उन पिया का संदेसा कहिया ॥
मारग का भेद सुनइया ।
सुत धुन संग अधर चढ़ावे ॥ ३ ॥
मोहि दीन अधीन निहारा ।
गुर कीन्ही मेहर अपारा ॥
मोहिँ भौजल पार उतारा ।
सुत चढ़ चढ़ अधिक हरषावे ॥ ४ ॥
धुन सुन सुत अधर सिधारी ।
सत अलख अगम्म लखारी ॥

पिया राधास्वामी रूप निहारी ।
उन महिमाँ छिन छिन गावे ॥ ५ ॥

—:o:—

शब्द ३

आज गरज गरज घन गरजे ।
मेरा जियरा सुन सुन लरजे ॥ टेक ॥
श्याम घटा रही छाई ।
अमी धार की बरषा लाई ॥
दामिन की दमक सुहाई ।
मेरा पिया बिन मनुवाँ तरसे ॥ १ ॥
सतगुर पिया भेद बतावें ।
गैल चलन की जुगत लखावें ॥
उन से नित प्रीत बढ़ावें ।
तब पिया प्यारे का पद दरसे ॥ २ ॥
मैं पिय की पीर दिवानी ।
मारग की पाय निशानी ॥
तन मन धन कर क़ुरबानी ।
गुर चरन गगन जाय परसे ॥ ३ ॥

वहाँ से भी चली अगाड़ी ।
सतपुर सतरूप निहारी ॥
गइ अलख अगम के पारी ।
राधास्वामी दरश पाय हरषे ॥ ४ ॥

—:o.—

शब्द ४

मेरे तपन उठत हिय भारी ।
गुरु प्रेम की बरषा कीजे ॥ टेक ॥
बिरह अगिन सुलगत नित घट में ।
कस निरखूँ छबि तिल पट में ॥
मेरी उमर गई खट पट में ।
अब तो गुरु दरशन दीजे ॥ १ ॥
बिन दरशन जिय घबरावे ।
जग भोग नहीं अब भावे ॥
कोइ बात न मोहिं सुहावे ।
अस काया छिन छिन छीजे ॥ २ ॥
गुरु मेहर करो अब भारी ।
देव चरनन प्रीत करारी ॥

तुम दर्शन नित्त निहारी ।
तब सुरत प्रेम रँग भीजे ॥ ३ ॥
तुम राधास्वामी समरथ दाता ।
मुझ को भी करो सनाथा ॥
तुम चरन रहूँ रस राता ।
मेरी सुरत सरन में लीजे ॥ ४ ॥

—:०:—

शब्द ५

क्यों जग में रहे भरमानी ।
मिल गुर से घर को चलना ॥ टेक ॥
यह देश बिगाना भाई ।
नित तिमिर रहे यहाँ छाई ॥
और काल करम भरमाई ।
भोगन सँग छिन छिन गलना ॥ १ ॥
सतसँग का देख बिलासा ।
गुर चरनन धर बिश्वासा ॥
निज घर की धारो आसा ।
जग भाठी में नहिँ जलना ॥ २ ॥

गुर प्रेम हिये में धारो ।
जग आसा दूर निकारो ॥
दूतन को मार पछाड़ो ।
मन माया छिन छिन दलना ॥ ३ ॥
सुत शब्द जुगत ले सारा ।
गुर नाम करो आधारा ॥
करमों का काटो जारा ।
धुन सुन सुन घट में चढ़ना ॥ ४ ॥
त्रिकुटी का देख उजेरा ।
सतपुर जाय कीन्हा फेरा ॥
कर अलख अगम से नेहरा ।
फिर राधास्वामी से जाय मिलना ॥ ५ ॥

—०—

शब्द ६

क्यों सोच करे मन मूरख ।
प्यारे राधास्वामी हैं रखवारे ॥ टेक ॥
जब जनमा तब दूध दियो तोहि ।
माता गोद पलाया ॥

सर्ब भाँति तेरी रक्षा कीन्हीं ।
चरनन मेल मिलाया ॥
रहा था फँस नौ द्वारे ॥ १ ॥

सर्ब भोग इंद्रिन के दीन्हे ।
जगत तमाशा दिखाया ॥
खैंच लिया सतसँग में फिर तोहि ।
निज घर भेद सुनाया ॥
मेहर से खोल चलो दस द्वारे ॥ २ ॥

बचन सुना तेरी समझ बढ़ावें ।
मन की निरख करावें ॥
करम भरम और टेक छुड़ाकर ।
शब्द में सुरत लगावें ॥
अधर चढ़ देख बहारें ॥ ३ ॥

घंटा संख सुनावें नभपुर ।
त्रिकुटी लख गुरु नूरा ॥
चंद्र चाँदनी चौक निहारो ।
गुफा परे पद पूरा ॥

आरती सतगुरु धारे ॥ ४ ॥
ले दुरबीन पुरुष से प्यारी ।
अलख अगम को चाली ॥
तिस पर राधास्वामी धाम अपारा ।
लख लख हुई निहाली ॥
सीस उन चरनन डारे ॥ ५ ॥

शब्द ७

क्यों अटक रही जग प्यारी ।
यामें दुख भोगे भारी ॥ टेक ॥
कोई यहाँ तेरा संग न साथी ।
स्वारथ सँग सब मिल रहते ॥
क्यों धोखा खाओ इन में ।
क्यों भोगन सँग नित बहते ॥
जम दंड सहो सरकारी ॥ १ ॥
सतसँग में मेल मिलाना ।
गुर चरनन भाव बढ़ाना ॥
सुन सुन निज बचन कमाना ।

घट मैं गुरु रूप धियाना ॥
गुरभक्ती रीत सम्हारी ॥ २ ॥
सुत शब्द जुगत ले गुरु से ।
नित नेम से कर अभ्यासा ॥
मन इंद्री सुरत समेटो ।
फिर घट मैं देख बिलासा ॥
ले गुर की मेहर करारी ॥ ३ ॥
गुर करम भरम सब टारैं ।
मन के करैं दूर बिकारा ॥
सब पिछली टेक निकारैं ।
दरसावैं फिर घर न्यारा ॥
लख उनकी गत मत न्यारी ॥ ४ ॥
राधास्वामी सरन सम्हारो ।
गुर के सँग अधर सिधारो ॥
लख जोत सूर और चंदा ।
सत अलख अगम को धारो ॥
हुइ राधास्वामी चरन दुलारी ॥ ५ ॥

—:o.—

भाग २

शब्द १

सुन री सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।
आज अचरज बचन सुनाय रहेरी ॥टेक॥
सुन सुन बानी सब हुए हैं दिवाने ।
तन मन सुध बिसराय रहेरी ॥ १ ॥
मेहर दया की बरषा भारी ।
प्रेम के बदरा छाय रहेरी ॥ २ ॥
धुन झनकार सुनत घट अंतर ।
नइ नइ उमँग जगाय रहेरी ॥ ३ ॥
सेवा कर हिये होत हुलासा ।
तन मन वार धराय रहेरी ॥ ४ ॥
राधास्वामी पर जावँ बलिहारी ।
जुड़ मिल उन गुन गाय रहेरी ॥ ५ ॥

शब्द २

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।
आज अद्भुत दरश दिखाय रहेरी ॥टेक॥

दर्शन कर मोहे नर नारी ।
छबि पर दृष्ट तनाय रहेरी ॥ १ ॥
क्या कहूँ महिमा अचरज रूपा ।
बहु सूर चंद शरमाय रहेरी ॥ २ ॥
जिन जिन दरश करा मेरे गुर का ।
सोइ निज भाग जगाय रहेरी ॥ ३ ॥
जगत जीव क्या जानें महिमा ।
सब करम धरम भरमाय रहेरी ॥ ४ ॥
आओरे आओ जीव सरनी आओ ।
राधास्वामी मेहर कराय रहेरी ॥ ५ ॥

—o:—

शब्द ३

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।
आज नइ धुन घट में सुनाय रहेरी ॥टेक॥
सुन सुन धुन सुत हुइ मतवाली ।
काल करम मुरझाय रहेरी ॥ १ ॥
मन और सुरत दोऊ रस पावत ।
गगन ओर अब धाय रहेरी ॥ २ ॥

हंसन संग करत नित केला ।
मान सरोवर न्हाय रहेरी ॥ ३ ॥
अधर जाय सुत मिली भक्तन से ।
भँवरगुफा ढिंग छाय रहेरी ॥ ४ ॥
धुन सुन गई जहँ राधास्वामी प्यारे ।
अचरज दरश दिखाय रहेरी ॥ ५ ॥

———०———

शब्द ४

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी ।
मोहिं प्यार से गोद बिठाय रहेरी ॥टेक॥
मैं तो नीच अधम नाकारा ।
मेहर से मोहिं अपनाय रहेरी ॥ १ ॥
सतसँग में मोहिं खैंच लगाया ।
भक्ती रीत सिखाय रहेरी ॥ २ ॥
बल अपना दे सेव कराई ।
छिन छिन रक्षा कराय रहेरी ॥ ३ ॥
शब्द भेद दे जुगत बताई ।
घट में सुरत चढ़ाय रहेरी ॥ ४ ॥

क्योंकर करूँ शुकराना उनका ।
(मेरे) रो रो गुन रहेरी ॥ ५ ॥
रन ोट दे ीव बचा ँ ।
ा ौर र रहेरी ॥ ६ ॥
ो कोइ र र ँ ाये ।
ब ा बना रहेरी ॥ ७ ॥
जीव निब क ा रे बि ारा ।
पनी दया से निभा रहेरी ॥ ८ ॥
परम गुरू समर रा ास्वामी ।
ब पर हर रा रहेरी ॥ ९ ॥

शब्द ५

मरी ी मेरे ारे रा ा ी ।
मोहिँ मेहर से ँगवा गा रहेरी ॥टे ॥
त ँग र बा ा बि ा ा ।
गहरी प्रीत गा रहेरी ॥ १ ॥
मी चरनन पर ँ हारी ।
मेहर ब न गाय रहेरी ॥ २ ॥

शब्द अभ्यास करत मन सूरत।
गगन ओर नित धाय रहेरी ॥ ३ ॥
दया हुई सुत सतपुर आई।
अलख अगम दरसाय रहेरी ॥ ४ ॥
राधास्वामी धाम गई सुत सज के।
निज महल में संग खेलाय रहेरी ॥ ५ ॥

शब्द ६

सुनरी सखी मेरे प्यारे राधास्वामी।
आज प्रेम रंग बरसाय रहेरी ॥ टेक ॥
अनुरागी जन जुड़ मिल आये।
बहु बिधि बिनती लाय रहेरी ॥ १ ॥
प्रेम दान दीजे गुरु प्यारे।
सब मन में तरसाय रहेरी ॥ २ ॥
सुन बिनती प्यारे राधास्वामी दाता।
घट में सुरत चढ़ाय रहेरी ॥ ३ ॥
मगन होय सुन नइ धुन घट में।
धन धन राधास्वामी गाय रहेरी ॥ ४ ॥

शब्द ७

सुनरी सखी मानो कहन मेरी।
चलो गुर सँग खेलो फाग आज ॥टेक॥
मोह नींद में कब लग सोना।
मिल सतगुर से जाग आज ॥ १ ॥
सतसँग कर हित चित से उनका।
तेरा सोता जागे भाग आज ॥ २ ॥
शब्द जुगत ले घट में बैठो।
सुन ले अनहद राग आज ॥ ३ ॥
दया मेहर ले चढ़ो अधर में।
मारो काला नाग आज ॥ ४ ॥
सरन धार राधास्वामी मन में।
माया घर से भाग आज ॥ ५ ॥
मिल हंसन से खेलो होली।
छोड़ो संगत काग आज ॥ ६ ॥
सत्त अलख और अगम के पारा।
राधास्वामी चरनन लाग आज ॥ ७ ॥

शब्द ८

चलोरी सखी आज गगन पुरी ।
जहँ गुरु प्यारे फाग रचाय रहेरी ॥टेक॥

गुरु सतसंगी सब मिल खेलें ।
प्रेम का रंग बहाय रहेरी ॥ १ ॥

आगे चल देखो सुन नगरी ।
जहँ हंस हंसनी गाय रहेरी ॥ २ ॥

शब्द शोर जहँ मच रहा भारी ।
अमृत धार चुवाय रहेरी ॥ ३ ॥

महासुन्न चढ़ भँवर गुफा लख ।
जहँ बंसी मधुर बजाय रहेरी ॥ ४ ॥

सतपुर जाय दरश पुर्ष कीन्हा ।
जहँ अचरज बीन सुनाय रहेरी ॥ ५ ॥

राधास्वामी चरन हुई लौलीना ।
जहँ अलख अगम दर छाय रहेरी ॥६॥

प्रेम का सोत पोत जहँ भारी ।
मेहर दया उमगाय रहेरी ॥ ७ ॥

राधास्वामी मात पिता पति मेरे ।
मोहिं प्यार से गोद बिठाय रहेरी ॥८॥

—o—

शब्द ९

चर ारत गुर ी धारूँ ।
उमँग नई हिये ाय रहीरी ॥ टे ॥

तसंगी ब हरषत ाये ।
त ंगन उमगाय रहीरी ॥ १ ॥

जब मा ा बरन नाऊँ ।
हुँ दि ानन्द गाय रहेरी ॥ २ ॥

ब र भो न बहु बिधि जे ।
दे भ हर रहेरी ॥ ३ ॥

ब त ा हिये ँ भारी ।
धन फू टाय रहेरी ॥ ४ ॥

धूम मची ारत ी भारी ।
बहु रि व ब घिर ाय रहेरी ॥ ५ ॥

ल मा हरष रहा न ँ ।
उमँग बधाई गाय रहेरी ॥ ६ ॥

अस अस देख बिलास नवीना।
सब जीव अचरज लाय रहेरी ॥ ७ ॥
राधास्वामी दयाल प्रसन्न होय कर।
मेहर दया फ़रमाय रहेरी ॥ ८ ॥
अपनी दया से काज बनाया।
आपहि करनी कराय रहेरी ॥ ९ ॥
सेव कराय दया से अपनी।
जन का भाग जगाय रहेरी ॥ १० ॥
राधास्वामी मेहर से हिये में सब के।
छिन २ प्रेम बढ़ाय रहेरी ॥ ११ ॥

शब्द १०

प्रेम भरी भोली बाली सुरतिया।
पल पल गुरु को रिझाय रही ॥ १ ॥
दीन होय लागी सतसँग में।
बचन सुनत हरषाय रही ॥ २ ॥
लिपट रही चरनन में हित से।
हिये गुर रूप बसाय रही ॥ ३ ॥

शब्द उपदेश पाय मगनानी ।
धुन मैं सुरत जमाय रही ॥ ४ ॥
गुर की दया परख अंतर मैं ।
उमँग उमँग गुन गाय रही ॥ ५ ॥
प्रेम बढ़ा अब हिये अंतर मैं ।
तन मन वार धराय रही ॥ ६ ॥
गुर का सतसँग लागा प्यारा ।
दर्शन को नित धाय रही ॥ ७ ॥
जस जल मीन हरष दर्शन कर ।
हिये का कँवल खिलाय रही ॥ ८ ॥
खेलत बिगसत संग गुरू के ।
मेहर दया नित चाह रही ॥ ९ ॥
प्रेमी जन सँग नाचत गावत ।
सुध बुध सब बिसराय रही ॥ १० ॥
राधास्वामी ख्याल लिया अपनाई ।
नित नया प्रेम जगाय रही ॥ ११ ॥

—o—

भाग ३

शब्द १

प्रेमी जइयोरे तसँग मैं।

लीजो सुरत जगाय ॥ टेक ॥

बिन सतसँग मन चेते नाहीँ।

सतगुर प्यारे की सरनाय ॥ १ ॥

मृत रूपी बचन गुरू के।

सुन सुन रहे चरन लौ लाय ॥ २ ॥

शब्द भेद लेकर तगुर से।

मन ौर सूरत अधर चढ़ाय ॥ ३ ॥

सुन सुन धुन सूरत मगनानी।

मन से लीन्हा खूँट ुड़ाय ॥ ४ ॥

सतगुर लार चली फिर प्यारी।

सत्तलोक किया आसन जाय ॥ ५ ॥

सत्त पुरुष का दर्शन पाया।

हंसन सँग लिया मेल मिलाय ॥ ६ ॥

वहँ से राधास्वामी धाम सिधारी।

मगन होय निज भाग मराय ॥ ७ ॥

—— .०. ——

शब्द २

प्रेमी मिलियोरे तगुर से ।
देवें ाज बनाय ॥ टे ॥

दया निधान परम हितकारी ।
जीवौं को दें ओट बुला ॥ १ ॥

दीन होय जो सरनी वे ।
ताको मेहर से लें .पनाय ॥ २ ॥

प्रीत प्रतीत बढ़ा चरनन ँ ।
रत शब्द ध्या राय ॥ ३ ॥

घट में तेरे दर्शन दे र ।
मन ौर सूरत अधर चढ़ाय ॥ ४ ॥

शब्द शब्द से मेला रके ।
इ दिन दें निज घर पहुँचाय ॥ ५ ॥

जो कु रैं रैं गुर प्यारे ।
जीव निबल ा कार माय ॥ ६ ॥

राधास्वामी तगुर प्यारे ।

महिमाँ उनकी को सके गाय ॥ ७ ॥

—:o—

शब्द ३

प्रेमी भागोरे जगत से ।
या सँग क्यों तू धोखा खाय ॥ टेक ॥
यह दुनिया काहू की नाहीं ।
भोग दिखा लिया जीव फँसाय ॥ १ ॥
याते छूटन कठिन बिचारो ।
सब ही या सँग गये लुभाय ॥ २ ॥
बिन सतगुर कोइ टे नाहीं ।
उन का सतसँग करो बनाय ॥ ३ ॥
बचन सुनो और चित में धारो ।
सूरत घट धुन संग लगाय ॥ ४ ॥
प्रीत प्रतीत चरन में धारो ।
राधास्वामी इ दिन काज बनाय ॥ ५ ॥

शब्द ४

—o—

प्रेमी मानोरे बचन ो ।
रहियो गुर चरनन लौ लाय ॥ टेक ॥

गुरु की महिमा कही न जावे ।
देवैं घट का भेद लखाय ॥ १ ॥
कुल मालिक राधास्वामी प्यारे के ।
चरनन में दें सुरत जुड़ाय ॥ २ ॥
नित अभ्यास करे जो घट में ।
चरन धार रस ले त्रिपताय ॥ ३ ॥
वही धार धुन शब्द पहिचानो ।
वही धार अमृत बरसाय ॥ ४ ॥
वही धार गह सुरत चढ़ाओ ।
उसी धार से रहो लिपटाय ॥ ५ ॥
चढ़ चढ़ पहुँचो धुर दरबारा ।
राधास्वामी दरशन पाय ॥ ६ ॥

—:o:—

शब्द ५

प्रेमी जागोरे तुम अबही ।
मोह की नींद बिसार ॥ टेक ॥
भूल भरम में कब तक रहना ।
ग़फ़लत तज अब हो हुशियार ॥ १ ॥

गुर सतसँग से नाता जोड़ो ।
बिरह अनुराग सम्हार ॥ २ ॥
कुल मालिक राधास्वामी चरनन में ।
चित को जोड़ो धर कर प्यार ॥ ३ ॥
धुन झनकार सुनो फिर घट में ।
प्रेम अंग ले सुरत सुधार ॥ ४ ॥
बिमल बिलास लखे अंतर में ।
गुर चरनन पै तन मन वार ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेहर से सुरत चढ़ावें ।
पहुँचे इक दिन निज दरबार ॥ ६ ॥

—.o:—

शब्द ६

प्रेमी रहियो रे हुशियार ।
माया घात बचाय ॥ टेक ॥
यह मन माया दोउ संसारी ।
जीव गये इन हाथ ठगाय ॥ १ ॥
निकसन की कोइ जुगत न पावें ।
बार बार जग में भरमाय ॥ २ ॥

नि　ामिनी　ान बड़ाई ।
जाल बि　लिया ीव फँ　ाय ॥ ३ ॥
बिन　तगुर　ोइ बचन न पावे ।
उन ी　रन पड़ो तु　जा　॥ ४ ॥
रत शब्द　ी जुगत　ा　ो ।
गुर चरनन में प्रीत बढ़ा　॥ ५ ॥
मेहर से घट　ँ देहिँ　हारा ।
पिंड　ं ड के पार पड़ा　॥ ६ ॥
राधा　ामी दीन द　ा　पानिधि ।
माया　ाल से लेहिँ बचा　॥ ७ ॥

शब्द ७

प्रेमी　ीजोरे　ध　र की ।
गुर　ँग शब्द　॥ टे　॥
शब्द धार धुर घर से　ाई ।
वही धार गह　घर　ढ़ाय ॥ १ ॥
वही धार गुर चरन　हावे ।
वा में गहरी प्रीत ब　ा　॥ २ ॥

गुर स्वरूप को सँग ले अपने ।
शब्द शब्द से मिलना जाय ॥ ३ ॥
या बिधि चाल चले जो कोई ।
दिन दिन चरनन प्रेम बढ़ाय ॥ ४ ॥
घट में लीला लखे नियारी ।
नित नवीन रस आनँद पाय ॥ ५ ॥
चढ़ चढ़ पहुँचे राधास्वामी धामा ।
दरश पाय निज भाग सराय ॥ ६ ॥

भाग ४

शब्द १

हेरी तुम कौन हो री ।
मोहिं अटकावन हारी ॥ टेक ॥
मैं दर्शन को गुर प्यारे के ।
जाउँगी मानूँ न कहन तुम्हारी ॥ १ ॥
मेरा चित्त बसे गुर चरनन ।
तुम बिरथा क्यों करो पुकारी ॥ २ ॥
गुर मेरे दीन दयाल कृपाला ।

उनके चरन पर जाउँ बलिहारी ॥३॥
मोसी अधम ो चरन लगाया।
तुम ो भी वे ले हैं उबारी ॥ ४ ॥
ा ो लो जनी ँग मेरे।
तगुर चरन ी ब डारी ॥ ५ ॥
ब जीवन ो यही ँदे ा।
जैसे बने तैसे रन म्हारी ॥६॥
राधास्वामी प्यारे तगुर मेरे।
ब जीवन ा ा सुधारी ॥७॥

शब्द २

हेरी तुम कैसी हो री।
जग बिच भरमन हारी ॥ टे ॥
जीव कल्यान की सुद्ध न लीन्ही।
दिन दिन मोह जाल बिस्तारी ॥ १ ॥
काम क्रोध के धक्के खाती।
लोभ मोह सँग सहो दु भारी ॥ २ ॥
जहँ जहँ आसा सुख की धारी।

वहीं वहीं झटके छिन छिन खारी ॥३॥
निस दिन सब जग जाता देखो ।
अपनी मौत की सुद्ध बिसारी ॥ ४ ॥
जल्दी चेत करो सतसंगत ।
गुर की दया ले काज सँवारी ॥ ५ ॥
भक्ति भाव अब मन में धारो ।
जीते जी कुछ काज बनारी ॥ ६ ॥
ले उपदेश करो अभ्यासा ।
मन के सबहि बिकार निकारी ॥ ७ ॥
राधास्वामी चरन धार लो मन में ।
मेहर से भौजल पार उतारी ॥ ८ ॥

—:o—

शब्द ३

हेरी तुम कैसी हो री ।
जग बिच भूलन हारी ॥ टेक ॥
जनम जनम का भूला मनुवाँ ।
भोगन में यहँ आन बँधा री ॥ १ ॥
जैसा संग मिला देही में ।

वैसीही जग आसा धारी ॥ २ ॥
जतन करे और दुख सु पावे।
जनम मरन I सहे दुख भारी ॥ ३ ॥
बिन तगुर ोइ बचे न भाई।
याते सतगुर रन म्हारी ॥ ४ ॥
वे दयाल तोहि जुगत ल ावें।
मेहर से तेरा करें छुट ारी ॥ ५ ॥
राधास्वामी सतगुर दीनदयाला।
सब जीवाँ की आस पुरारी ॥ ६ ॥

शब्द ४

हेरी तुम कौन हो री।
मोहिँ भरमावन हारी ॥ टेक ॥
बहु दिन कीन्हा संग तुम्हारा।
दिन २ जग बिच रही फँसारी ॥ १ ॥
अब मोहिँ मिले गुरू दातारा।
उन सँग अपना ाज धारी ॥ २ ॥
समझ तुम्हारी मैं नहिँ धारूँ।

तुम अजान बहती मन लारी ॥ ३ ॥
मैं गुर सीख धरूँ हिरदे में ।
सुरत शब्द की कार कमारी ॥ ४ ॥
गुर की दया ले नभ पर धाऊँ ।
निरखूँ जाकर गगन अटारी ॥ ५ ॥
सतपुर सतगुर दर्शन करके ।
राधास्वामी चरन मिलत सुखियारी ॥६॥

भाग ५

शब्द १

चेतोरे जग काम न आवे ॥ टेक ॥
यह जग चार दिनों का सुपना ।
कोई थिर न रहावे ॥ १ ॥
पता भेद तुम्हरे निज घर का ।
गुर बिन कौन बतावे ॥ २ ॥
वह निज घर है राधास्वामी धामा ।
शब्द पकड़ सुत जावे ॥ ३ ॥
शब्द भेद लेकर सतगुर से ।

धुन सुन घर चढ़ावे ॥ ४ ॥
चढ़ चढ़ पहुँचे दसवें ारा ।
बेनी में पैठ न्हावे ॥ ५ ॥
तपुर जाय मिले तगुर से ।
ल गम को धावे ॥ ६ ॥
तगुर दया ाज हु ा पूरा ।
राधा ामी चरन मावे ॥ ७ ॥

शब्द २

भागोरे जग से ब भागो ॥ टे ॥
भूल भरम ग़. लत ब ोड़ो ।
जागोरे गुर से मि जागो ॥ १ ॥
सत ंग र ले भेद गुरू से ।
ागोरे चरनन में लागो ॥२॥
मन इंद्री ो रो ँदर में ।
त्यागोरे बिषयन ो त्यागो ॥ ३ ॥
नैन कँवल में बाट ल ाई ।
ताकोरे गुर नैना ता ो ॥ ४ ॥

राधास्वामी दया सँग ले अपने ।
सूरत शब्द अधर में राखो ॥ ५ ॥

—o—

शब्द ३

चेतोरे घर घाट सम्हारो ॥ टेक ॥
या देही सँग क्यौं दुख सहना ।
निज सुख घर की ओर सिधारो ॥१॥
बिन सतगुर को भेद बतावे ।
उनका सँग करो धर प्यारो ॥ २ ॥
करम धरम सब भरम हटा कर ।
गुर का बचन हिये बिच धारो ॥ ३ ॥
शब्द भेद और जुगत चलन की ।
ले गुर से घट अधर पधारो ॥ ४ ॥
घंटा संख सुनी धुन दोई ।
गगन माहिँ गुर रूप निहारो ॥ ५ ॥
निर्मल हुइ सुन सारँग बानी ।
मुरली सुन धुन बीन सम्हारो ॥ ६ ॥
सुन २ बतियाँ अलख अगम की ।

राधास्वामी चरन करो दीदारो ॥७॥

———o———

शब्द ४

जागोरे यहँ कब लग सोना ॥ टेक ॥
चेत करो निज घर को खोजो ।
बिरथा वक़्त यहाँ नहिँ खोना ॥ १ ॥
मन मलीन जग मेँ भरमावे ।
सतसँग कर कलमल सब धोना ॥ २ ॥
गुर के बचन हिये मेँ धरना ।
सुरत शब्द मेँ निस दिन पोना ॥ ३ ॥
जगत मोह अब छिन २ तजना ।
भक्ती बीज हिये मेँ बोना ॥ ४ ॥
पिंड अंड ब्रह्मंड के पारा ।
राधास्वामी धाम करो अब गौना ॥५॥

———o———

शब्द ५

धाओरे गुर सरन सम्हारी ॥ टेक ॥
घट मेँ निरख बहार नवीना ।
सुरत शब्द मत धारी ॥ १ ॥

सुन २ धुन सुत अधर चढ़ाओ ।
लखो जोत उजियारी ॥ २ ॥
बंक नाल धस त्रिकुटी पारा ।
सुन में जाय अक्षर धुन धारी ॥ ३ ॥
भँवर गुफा मुरली धुन सुन कर ।
सुरत हुई सतगुर दरबारी ॥ ४ ॥
अलख अगम का मुजरा करके ।
राधास्वामी चरन सीस डारी ॥ ५ ॥
अचरज रूप निरख मंगलानी ।
वाह २ प्रीतम बलिहारी ॥ ६ ॥

—:o:—

भाग ६

शब्द १

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
तुम्हें लाज न आई ।
क्यों नहिं सोहिं सम्हारो ॥ टेक ॥
मैं भरमत रहुँ जग में निस दिन ।
तुम नित सतसँग करो बनाई ।

ौर तगुर ी सेवा धारो ॥ १ ॥
क्यों नहिं मुझ को बचन सुना ो ।
ौर पने ँग लेव लगाई ।
मोहिं मेहर दया र प्यारो ॥ २ ॥
जो तुम एती दया बिचारो ।
गुर सँग मेरा मेल मिलाई ।
मेरा उतरे रम ा भारो ॥ ३ ॥
गुर हैं दीनदयाल गुसाईं ।
जीव दया नित चित्त बसाई ।
मोहिं धम ो देहिं हारो ॥ ४ ॥
मैं ब तक रहा मनमुख भारी ।
भोगन में रहा धि फँ ाई ।
नहिं खोजा निज घर न्यारो ॥ ५ ॥
मोहिं सूझ पड़ा यह बही भाई ।
गुर बिन नहिं कोइ और सहाई ।
जग झूठा खेल पसारो ॥ ६ ॥
 ब मैं भक्ति रूँ तन मन से ।
सतगुर चरन सरन गह भाई ।

जाउँ भौसागर पारो ॥ ७ ॥

तुम सब करो मदद मेरी मिल कर ।

तब प्यारे राधास्वामी चरन निहारी ।

तन मन से होकर न्यारो ॥ ८ ॥

—:०:—

शब्द २

मेरे प्यारे बहन और भाई ।

क्यौं ग़फ़लत में रहो सोते ।

गुर लेव सम्हारी ॥ टेक ॥

या जग में नित रहना नाहीं ।

इक दिन तन तज जाना ।

टुक वहँ की बात बिचारी ॥ १ ॥

सतगुर वहँ के भेदी कहियन ।

मिल उनसे लेव समझौती ।

निज घर वे देहिँ लखारी ॥ २ ॥

सतसँग उनका करो चित लाई ।

बचन अमोल हिये बिच धारो ।

तोहि कर दें जग से न्यारी ॥ ३ ॥

कुल मालिक राधास्वामी प्यारे ।
भेद उनका दूँ घट में सारा ।
सुत शब्द की जुगती धारी ॥ ४ ॥
मन और सुरत अधर नित धावे ।
सुन सुन घट धुन झनकारी ।
पावे रस आनँद भारी ॥ ५ ॥
गुरु पद परस गई तपुर में ।
मधुर बीन धुन सुनी सारी ।
पद अलख अगम निरखारी ॥ ६ ॥
वहँ से चल पहुँची निज धामा ।
प्यारे राधास्वामी दर्श लखारी ।
उन चरनन पर बलिहारी ॥ ७ ॥

—o—

शब्द ३

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
या जग बिच घोर ँधेरा ।
तन में भी तम रहा ाई ॥ टे ॥
मन इंद्री का ज़ोर घनेरा ।

पाँच दूत अति कर बलवाना।
जीवन का बल पेश न जाई ॥ १ ॥
ाल करम से बचना चाहो।
तौ सतगुर सँग चालो।
मग मैं कोइ बिघन न आई ॥ २ ॥
जनम मरन का दुख अति भारी।
देही सँग दुख सुख नित सहना।
याते जिव लेव बचाई ॥ ३ ॥
सतगुर हैं सच्चे हितकारी।
वे काटैं सब काल कलेशा।
सरन गहे ताके होयँ सहाई ॥ ४ ॥
चलो री सखी अब देर न कीजे।
गुर सतसँग मैं तन मन दीजे।
धार हिये राधास्वामी सरनाई ॥ ५ ॥

शब्द ४

मेरे प्यारे बहन और भाई।
गुर चरन सरन गह चालो।

मन माया का ज़ोर घनेरा ॥ टेक ॥
यह मन मूरख चेते नाहीँ।
भोगन मेँ रहै सदा अधीना।
दुनिया का न ोड़े बखेड़ा ॥ १ ॥
बिन गुर तगुर ौन चितावे।
वे देहिँ दया का हारा।
तब यह ूटे सबेरा ॥ २ ॥
पने बल से ूटे नाहीँ।
खोजो सतगुर द्याल गुसाईँ।
मत र तू बहुत बेरा ॥ ३ ॥
भाग जगे जिन तगुर पाये।
रत शब्द की जुगत माये।
घट मेँ निज पद को हेरा ॥ ४ ॥
रत चढ़ी पहुँची द द्वारे।
राधास्वामी चरन धुर धाम निहारे।
ा हजहि ाज निबेड़ा ॥ ५ ॥

—:o:—

शब्द ५

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
जग मोह बिसारो ।
सतगुर से नेह लगा लो ॥ टेक ॥
यह जग तुम्हरा संगी नाहीँ ।
गुर का सतसँग धारो ।
भूल ौर भरम मिटा लो ॥ १ ॥
दया लेव तुम उनकी हर दम ।
सुरत शब्द की जुगत सम्हालो ।
मन ौर सुरत जगा लो ॥ २ ॥
भोग बासना चित से ोड़ो ।
मन ौर स्रुत निज घट में जोड़ो ।
बिघन ौर बिकार नि ालो ॥ ३ ॥
जस जस आनँद घट में पावे ।
प्रीत प्रतीत चरन में बाढ़े ।
प्रेम रँग सुरत रँगा लो ॥ ४ ॥
चरन सरन राधा ामी हिये धर ।
धुन ँग रत चढ़ा ो धर धर ।

मेहर से आजहि काज बना लो ॥५॥

शब्द ६

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
गुर सतसंग का रस लीजे ॥
अस औसर फिर न मिलेगा ॥ टेक ॥
बिन सतसँग समझ नहिँ आवे ।
जगत भोग सब झूठे ।
कोई सँग न चलेगा ॥ १ ॥
गुर सँग प्रीत करे सोइ बाचे ।
सुरत शब्द का मारग ताके ।
वही सतसँग में रलेगा ॥ २ ॥
ध्यान लाय गुर प्रीत बढ़ावे ।
सुन सुन धुन स्रुत अधर चढ़ावे ।
वाही का कर्म जलेगा ॥ ३ ॥
अनुभव जागे तो सब कुछ सूझे ।
गुर का बल ले काल से जूझे ।
वहि सज्जन माया को दलेगा ॥ ४ ॥

राधास्वामी चरन सरन जिन धारी ।
वहि जन पहुँचे निज दरबारी ।
अचरज दर्शन पाय खिलेगा ॥ ५ ॥

—:o:—

शब्द ७

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
ज़रा सोचो समझो मन मैं ।
गुरु लो पहिचानी ॥ टेक ॥
सतसँग कर उन बचन बिचारो ।
मन मैं उन का असर निहारो ।
अस परखो साध निशानी ॥ १ ॥
कोइ दिन सँग कर देखो रहनी ।
सत मत सँग परखो उन गहनी ।
तब सहज सहज मन मानी ॥ २ ॥
प्रीत सहित करो शब्द अभ्यासा ।
घट मैं देखो बिमल बिलासा ।
तब सतगुरु की दया नज़र आनी ॥३॥
गुरु हैं समरथ दीनदयाला ।

सरन पड़े को लेहिँ सम्हाला।
तेरी छिन छिन रक्षा ठानी ॥ ४ ॥
अस परचे जो नित प्रति देखे।
अंतर बाहर दया नित पेखे।
सो मन में परतीत समानी ॥ ५ ॥
जो धारे अस दृढ़ परतीती।
दिन दिन जागे हिये में प्रीती।
वह सतगुर की महिमा जानी ॥ ६ ॥
दया करें गुर सुरत चढ़ावें।
घट का भेद सबहि दरसावें।
इक दिन राधास्वामी चरन समानी ॥ ७ ॥

—o—

शब्द ८

मेरी प्यारी सहेली हो।
क्यों जनम गँवाओ हो ॥ टेक ॥
दर्शन कर मेरे गुर प्यारे का।
निज भाग जगाओ हो ॥ १ ॥
आज काज करो जीव अपने का।

नहिँ जमपुर जाय पछताओ हो ॥ २ ॥
छोड़ो अबही लाज जगत की ।
गुर सतसँग मँ आओ हो ॥ ३ ॥
दर्शन कर उमगे हिये प्यारा ।
बचन सुनत जग भाव भुलाओ हो ॥४॥
निर्मल दृष्ट से देखो लीला ।
दम २ उमँग बढ़ाओ हो ॥ ५ ॥
भेद पाय मन सुरत समेटो ।
घट अधर चढ़ाओ हो ॥ ६ ॥
बिमल बिलास लखो हिये अंतर ।
तब निज भाग सराहो हो ॥ ७ ॥
राधास्वामी दया परख फिर घट मैं ।
नया २ प्रेम जगाओ हो ॥ ८ ॥
बिन गुर सरन होय जीव अकाजा ।
कुटँब को भी सँग लाओ हो ॥ ९ ॥
राधास्वामी दयाल ी दया अपारा ।
सब को पार लगाओ हो ॥ १० ॥

ऐसी महिमा राधास्वामी निर त ॥
हरष २ गुन गा ो हो ॥ ११ ॥

शब्द ९

—:o:—

मेरी प्यारी　हेली हो ।
दया र　र जता दो री ॥ टे ॥
तुम प्यारी प्यारे ँचे गुर की ।
मोहिँ सँग मैं मिला लो री ॥ १ ॥
घट　ा भेद ौर राह चलन की ।
गुर महिमा सुना दो री ॥ २ ॥
प्रेम रँग गुर नित बरसावैं ।
मेरी सुरत रँगा दो री ॥ ३ ॥
मन इंद्री के बिकार हटा　र ।
गुर चरन लगा दो री ॥ ४ ॥
दीन होय गुर चरनन　ाई ।
मो पै मेहर करा दो री ॥ ५ ॥
अपना जान सम्हालो मुझ　ो ।
घट प्रेम जगा दो री ॥ ६ ॥

राधास्वामी चरन सरन गह बैठूँ ।
ऐसी दया करा दो री ॥ ७ ॥
औगुन पर मेरे दृष्ट न कीजे ।
मेरा आजहि काज बना दो री ॥ ८ ॥
दया छिमा तुम हिरदे बस्ती ।
मेहर से खोट हटा दो री ॥ ९ ॥
दीन अधीन पड़ी गुर द्वारे ।
काल से खूँट छुड़ा दो री ॥ १० ॥
सुरत चढ़ाय अधर में धाऊँ ।
राधास्वामी दरस दिखा दो री ॥ ११ ॥

भाग ७

शब्द १

तुम जीते सुरत चढ़ाओ ।
मुए पर क्या करिहो ॥ १ ॥
सुन सुन शब्द चढ़ो घट अंतर ।
गुनना छोड़ रहो ॥ २ ॥
चढ़ चढ़ जाओ त्रिकुटी पारा ।

सतपुर जाय बसो ॥ ३ ॥
राधास्वामी का दर्शन पाकर ।
चरनन लिपट रहो ॥ ४ ॥

—o—

शब्द २

तुम अबही गुर सँग धाओ ।
बहुर पछताना पड़े ॥ १ ॥
सतसँग कर गुर सेवा धारो ।
मन में उमँग भरे ॥ २ ॥
शब्द भेद ले करो अभ्यासा ।
सूरत अधर चढ़े ॥ ३ ॥
राधास्वामी दयाल दया करें अपनी ।
तो सब काज सरे ॥ ४ ॥

—o—

शब्द ३

तुम अबही मन को माँजो ।
बहुर क्या काज सरे ॥ १ ॥
सतसँग करो बचन उर धारो ।

नित २ मनन करे ॥ २ ॥
सार धार फिर करे कमाई ।
सूरत गगन भरे ॥ ३ ॥
तब मन निश्चल चित होय निर्मल ।
राधास्वामी ध्यान धरे ॥ ४ ॥

शब्द ४

तुम अबही सतसँग धारो ।
बहुर नहिँ औसर मिले ॥ १ ॥
सतगुर से करो प्रीत घनेरी ।
सूरत अधर चले ॥ २ ॥
चढ़ २ पहुँचे सहसकँवल मेँ ।
जग मग जोत बले ॥ ३ ॥
वहँ से पहुँचे सतगुर देसा ।
राधास्वामी चरन रले ॥ ४ ॥

शब्द ५

तुम अबही गुर से मिलो ।
जगत की लज्या तजो ॥ १ ॥

सतसँग उनका रो प्रेम से ।
जग से आज भजो ॥ २ ॥
दया लेव उनकी तुम हर दम ।
सूरत चरन सजो ॥ ३ ॥
बिरह ंग ले अधर चढ़ाओ ।
शब्द शब्द सँग ाज गजो ॥ ४ ॥
मेहर दया सतगुर की ले र ।
राधास्वामी चरनन जाय रजो ॥ ५ ॥

तृप्त होना

शब्द ६

म बही बिरह जगाय ।
शब्द में सुरत धरो ॥ १ ॥
तगुर ा त ँग र हित से ।
दीन होय उन चरन पड़ो ॥ २ ॥
मेहर से जब वे भेद नावें ।
घट में नित ा रो ॥ ३ ॥
भजन करो ौर धारो ध्याना ।

काल करम से नाहिँ डरो ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन सरन हिये दृढ़ कर ।
भौसागर से आज तरो ॥ ५ ॥

शब्द ७

तुम अबही गुर सँग रलो ।
हिये मैं प्रेम भरो ॥ १ ॥
अब नहिँ मिलो बहुर कब मिलिहो ।
चौरासी मैं जाय पड़ो ॥ २ ॥
याते चेतो समझो अबही ।
सतसँग कर गुर सरन गहो ॥ ३ ॥
राधास्वामी नाम सुमिर निज नामा ।
गुर मूरत का ध्यान धरो ॥ ४ ॥
शब्द धार घट हर दम जारी ।
चित से उसको चेत सुनो ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेहर से पार लगावैं ।
अस भौसागर सहज तरो ॥ ६ ॥

भाग ८

शब्द १

—:o:—

हे ररिया ा के रिया ।
छोड़ो हमारी डगरिया हो ॥ टेक ॥
मैं प्यारी प्यारे राधास्वामी ी ।
बसूँ न तोरी नगरिया हो ॥ १ ॥
तगुर मोहिं निज भेद बताया ।
जाओ घर झाँक झँझरिया हो ॥ २ ॥
शब्द डोर निज घर से लागी ।
चलो चढ़ पकड़ रसरिया हो ॥ ३ ॥
मारग ँ ट ू नहिँ बहीं ।
माया की हाट बजरिया हो ॥ ४ ॥
गुरु बल काल करम सिर फो ूँ ।
माया की फाडूँ चदरिया हो ॥ ५ ॥
जोत रूप लख त्रिकुटी धाऊँ ।
चंदा की निरखूँ उजरिया हो ॥ ६ ॥
हंसन ंग मानसर न्हाऊँ ।

भरलूँ अमी गगरिया हो ॥ ७ ॥
भँवर गुफा भेटूँ सोहं से ।
जहँ बाजे मधुर बँसुरिया हो ॥ ८ ॥
ठुमक २ पग धरूँ घर मैं ।
सुन धुन बीन अमरिया हो ॥ ९ ॥
राधास्वामी चरन जाय फिर परसूँ ।
मिला पद अमर अजरिया हो ॥१०॥

—:०.—

शब्द २

हे मन भोगी सदा के रोगी ।
चलो घर हमरे था हो ॥ टे ॥
जनम जनम तुम दु भोगो ।
काया संग बँधाता हो ॥ १ ॥
अब के चेत करो तसंगा ।
गुर सँग जोड़ो नाता हो ॥ २ ॥
वे हैं समरथ बंदी छोड़ा ।
मेहर से घर पहुँचाता हो ॥ ३ ॥
जगत भोग की आसा छोड़ो ।

गुर चरनन मन राता हो ॥ ४ ॥
शब्द कमाई करो उमँग से ।
सूरत अधर चढ़ाता हो ॥ ५ ॥
गगन जाय सूरत अलगानी ।
मन वहँ राज कमाता हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से आगे चाली ।
लखा निज धाम सुहाता हो ॥ ७ ॥

शब्द ३

हे मन मानी सद अज्ञानी ।
क्यौं दुख सुख यहँ सहना हो ॥टेक॥
सुरत पड़ी बस तेरे तन में ।
निज घर बार भुलाना हो ॥ १ ॥
इंद्री संग बहिरमुख बरते ।
भोगन माहिँ लुभाना हो ॥ २ ॥
धन सम्पति सँग रहे मदमाता ।
कुल परिवार बँधाना हो ॥ ३ ॥
परमारथ की सार न जाने ।

जगत सत्त कर जाना हो ॥ ४ ॥
अब तो चेत ज़रा तू हे मन ।
खोजो सतगुर स्याना हो ॥ ५ ॥
सेवा कर सतसँग र उनका ।
शब्द में सुरत लगाना हो ॥ ६ ॥
राधास्वामी मेहर से देवें तुझ को ।
चरनन माहिँ ठिकाना हो ॥ ७ ॥

शब्द ४

मन के घाट बैठ सुत ।
घर की सु बिसारी ॥
इंद्रियन सँग भरमाय ।
फँसी अब भोगन लारी ॥

॥ दोहा ॥

पाँच दूत मिल खैंचते ।
याहि अपनी २ ओर ॥
बिन सतगुर अ कौन है ।
जो देहि ठि ाना ठौर ॥

खोज सतगुर का करो प्यारी ॥ १ ॥
पंडित भेष शेख़ और मुल्ला ।
देखे सब संसारी ॥
इनका संग करे जो कोई ।
जाय न भौजल पारी ॥

॥ दोहा ॥

यह सब अटके मान में ।
और लोभ संग भरमाय ॥
काल करम के जाल में ।
यह फिर २ भौ भटकाय ॥
साध सँग ले गुर ज्ञान बिचारी ॥२॥
सतसँग जल अशनान कर ।
ले तन मन आज पखारी ॥
गुर चरनन परतीत लाय नित ।
आरत सेवा धारी ॥

॥ दोहा ॥

करम धरम सब त्याग कर ।
दे भोगन को बिसराय ॥

शब्द जोग अभ्यास कर ।
ले सूरत अधर चढ़ाय ॥
प्रेम रँग भीज रहे सारी ॥ ३ ॥
सुन सुन अचरज शब्द ।
हुई सूरत मतवारी ॥
सतगुर दीनदयाल ।
लिया मोहिँ आप सम्हारी ॥

॥ दोहा ॥

अनहद बाजे बज रहे ।
और चहुँ दिस धुन झनकार ॥
सुरत मगन होय थिर खड़ी ।
और मनुवाँ अति सरशार ॥
दया से मिला औसर भारी ॥ ४ ॥
राधास्वामी हुए परसन्न ।
सुरत मेरी दीन सिँगारी ॥
मन इंद्री के घाट से ।
किया (मोहिँ) छिन में न्यारी ॥

॥ दोहा ॥

हरष हरष निरखत रहूँ ।
प्यारे राधास्वामी चरन बिलास ॥
राधास्वामी दर्शन नित चहूँ ।
मेरे और न दूजी आस ॥
दया पर तन मन धन वारी ॥ ५ ॥

— ० —

शब्द ५

गुर चरनन लौलीन ।
सुरत जग किरत हटाई ॥
मन इंद्रियन सँग प्यार ।
और बयौहार घटाई ॥

॥ दोहा ॥

सतसँग प्यारा लागता ।
और सुरत शब्द अभ्यास ॥
सतगुर सेवा धार कर ।
हिये होवत नित्त हुलास ॥
रीत गुर भक्ति लगी प्यारी ॥ १ ॥
गुर आरत बिधि धार ।

लिया सब साज बनाई ॥
गुर सोभा अद्भुत बनी ।
कु कहा न जाई ॥

॥ दोहा ॥

प्रेम मगन सब हो रहे ।
और चहुँ दिस आनँद छाय ॥
गुर प्यारे का दरस कर ।
सब लीन्हा भाग जगाय ॥
गाऊँ कस महिमा गुर भारी ॥ २ ॥
सतसँग में गुर बैठ के ।
निज बचन सुनाई ॥
सुन न बाढ़ा प्रेम ।
सुरत मन ति सरसाई ॥

॥ दोहा ॥

घट में झाँक मगन होय ।
सुन अनहद झनकार ॥
दूत सकल निरबल हुए ।
गुर कीन्ही मेहर अपार ॥

भोग सब लागे अब खारी ॥ ३ ॥
गुर की सरन सम्हार ।
बिरह हिये नइ उमँगाई ॥
काल करम बल तोड़ ।
सुरत को अधर चढ़ाई ॥

॥ दोहा ॥

गगन पार सुन मैं गई ।
और देखा हंस बिलास ॥
भँवरगुफा सुन बाँसरी ।
किया सतगुर चरन निवास ॥
सुरत हुइ राधास्वामी की प्यारी ॥ ४ ॥

शब्द ६

मन चंचल चहुँ दिस धाय ।
सखी मैं नहिँ जाने दूँगी ॥
गुर बल हियरे धार ।
बिघन कोइ नहिँ आने दूँगी ॥ टेक ॥
माया भोग दिखाय ।

भुलावत जीवन को जग में ॥
मैं गुर नाम अधार ।
दाव वाहि नहिं पाने दूँगी ॥ १ ॥
मन है बड़ा गँवार ।
करे नहिं चरनन बिस्वासा ॥
मैं गुर टेक सम्हार ।
भरम कोइ नहिं लाने दूँगी ॥ २ ॥
गुर का ध्यान सम्हार ।
चरन में मन को साध रहूँ ॥
बिन राधास्वामी नाम ।
और कुछ नहिं गाने दूँगी ॥ ३ ॥

—o—

शब्द ७

मनुवाँ कहन न मान सखी ।
मैं कौन उपाय करूँ ॥ टेक ॥
बहु बिधि रहा समझाय ।
भरमता फिर २ भोगन में ॥
गुर की कान न मानै मूरख ।

क्यौंकर बाँध रखूँ ॥ १ ॥
निरभय होय तरंग उठावत ।
रोक टोक माने नाहीं ॥
मैं तो कीन्हे जतन अनेका ।
कैसे इसको मार मरूँ ॥ २ ॥
सतसँग करता नित्त ।
शब्द का करता अभ्यासा ॥
अपनी हठ नहिं छोड़े ।
कहो फिर कैसे पार पड़ूँ ॥ ३ ॥
गुर की दया ले संग ।
सुरत रहे चरनन मैं राती ॥
राधास्वामी सरन सम्हार ।
जगत से या बिधि आज तरूँ ॥ ४ ॥

———०———

शब्द ८

मन तू करले हिये धर प्यार ।
राधास्वामी नाम का आधार ॥ टेक ॥
राधास्वामी नाम है अगम अपारा ।

जो सुमिरे तिस लेहि उबारा ॥
न घट मैं नहद झनकार ॥ १ ॥

राधास्वामी धाम है ऊँच से ऊँचा ।
संत बिना कोइ जहाँ न पहुँचा ॥
दरस किया जाय कुल रतार ॥ २ ॥

राधास्वामी नाम की महिमा भारी ।
शेष.महेश कहत सब हारी ॥
लीला अपर पार ॥ ३ ॥

राधास्वामी परम पुरुष जग ाये ।
हंस जीव सब लिये मुक्ताये ।
और जीवन पर बीजा डार ॥ ४ ॥

नाम की महिमा बहु बिधि गाई ।
मुक्ती की यहि जुगत बताई ॥
सुमिरो राधास्वामी बारम्बार ॥ ५ ॥

राधास्वामी नाम का भेद सुनाया ।
रत शब्द मारग दरसाया ॥
धुन ँग सुरत चढ़ाओ पार ॥ ६ ॥

धुन आत्मक जो राधास्वा ी नामा।
तिस महिमा कस कहूँ ब ाना॥
जो सुने सोइ जाय निज घरबार॥७॥

—o—

शब्द ९

मन तू सुन ले चित दे ाज।
राधास्वामी नाम की आवाज़॥टेक॥
अनहद बाजे घट २ बाजैं।
नुरागी सुन सुन आराधैं।
प्रेम भक्ति का लेकर साज॥१॥
तीन लोक मैं अनहद राजे।
सत्त लोक सत शब्द बिराजे।
तिस परे राधास्वामी ना ी गाज॥२॥
ब्द की महिमा तन गाई।
जिन मानी धुन तिन्हैं नाई।
कर दिया उनका पूरा ाज॥३॥
राधास्वामी नाम हिये ँ धारा।
ोई जन हु ा ब से न्यारा।

त्याग दई कुल जग की लाज ॥ ४ ॥
राधास्वामी नाम प्रीत जिन धारी ।
राधास्वामी तिसको लिया सुधारी ।
दान दिया वाहि भक्ती दाज ॥ ५ ॥
राधास्वामी नाम है अधर अपारा ।
राधास्वामी नाम है सार का सारा ।
जो सुने सोइ करे घट में राज ॥ ६ ॥

शब्द १०

जगत भोग मोहि नेक न भावें ।
मैं तो तगुर ढूँढूँगी ॥ टेक ॥
तगुर ी महिमा ति भारी ।
बिन उनके कोइ जाय न पारी ।
मैं तो उनहीं को सेऊँगी ॥ १ ॥
तसँग र गुरु चरन धियाऊँ ।
सुन २ बचन हिये उमगाऊँ ।
मैं तो उनहीं की जुगत माऊँगी ॥२॥
भाग जगे तगुर मिले ाई ।

दीन देख मोहि लिया अपनाई ।
चरनन प्रीत बढ़ाऊँगी ॥ ३ ॥
ले उपदेश सुनूँ घट धुन को ।
घेर और फेर लगाऊँ मन को ।
गगन ओर नित धाऊँगी ॥ ४ ॥
गुर पद परस सरोवर न्हाऊँ ।
भँवर गुफा सोहं धुन गाऊँ ।
सतपुर बीन बजाऊँगी ॥ ५ ॥
अलख पुरुष की आरत धारूँ ।
अगम पुरुष का रूप निहारूँ ।
राधास्वामी चरन समाऊँगी ॥ ६ ॥
सतगुर दया परम पद पाया ।
राधास्वामी धाम अजब दरसाया ।
छिन २ उन गुन गाऊँगी ॥ ७ ॥

भाग ८

शब्द १

प्रेम दात गुरु दीजिये ।
मेरे समरथ दाता हो ॥ १ ॥

दरस पाय नित मगन रहूँ ।
मेरे यही अभिलाषा हो ॥ २ ॥
प्रेम रंग भीजत रहूँ ।
नित तुमहिँ धियाता हो ॥ ३ ॥
मेरे सर्ब अंग मैं बस रहो ।
नित तुम गुन गाता हो ॥ ४ ॥
माया के सब बिघन हटाओ ।
काल रहे मुरझाता हो ॥ ५ ॥
मन इंद्री का ज़ोर न चाले ।
नित्त रहूँ रंग राता हो ॥ ६ ॥
भोग बिलास जगत के सारे ।
मो को कुछ न सुहाता हो ॥ ७ ॥
यह बख़्शिश करो राधास्वामी प्यारे ।
अब क्यों देर लगाता हो ॥ ८ ॥
देर २ मैं होत अकाजा ।
योंहिँ दिन बीते जाता हो ॥ ९ ॥
यह बिनती मानो मेरे प्यारे ।

राधास्वामी पित और माता हो ॥१०॥
प्रेम दात बिन सुनो मेरे प्यारे।
यह मन नाच नचाता हो ॥ ११ ॥
मेरा बस यासे नहिँ चाले।
भोगन मैं मद माता हो ॥ १२ ॥
दया करो मेरी सुरत चढ़ाओ।
घट मैं शब्द बजाता हो ॥ १३ ॥
जो तुम दया करो मेरे प्यारे।
फूला अँग न समाता हो ॥ १४ ॥
नाम तुम्हार सुनाऊँ सब को।
जग मैं धूम मचाता हो ॥ १५ ॥
बल २ जाउँ चरन पर तुम्हरे।
छिन २ तुम्हैं रिझाता हो ॥ १६ ॥
खुल २ खेलूँ सुन मैं प्यारे।
काटूँ करम बिधाता हो ॥ १७ ॥
खेलूँ बिगसूँ संग तुम्हारे।
दया पाय इतराता हो ॥ १८ ॥

मगन रहूँ नित घट में पने ।
चरनन सँग इठलाता हो ॥ १९ ॥
सुन २ शब्द होय मतवाला ।
छिन २ अमी चुआता हो ॥ २० ॥
ऐसी मौज करो ब प्यारे ।
दम २ बिनय सुनाता हो ॥ २१ ॥
होय निचिंत मेरे प्यारे राधास्वामी ।
तुम चरनन माहिँ माता हो ॥ २२ ॥

—:o:—

शब्द २

घट में दर्शन दीजिये ।
मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥ १ ॥
बिन दर्शन मोहि चैन न वे ।
मेरी ँ ाँ के तारे हो ॥ २ ॥
बिन दर्शन मैं तड़प रहूँ ।
मेरे प्रान धारे हो ॥ ३ ॥
बिन दरशन मोहि कछु न सुहावे ।
मेरे जग उजियारे हो ॥ ४ ॥

बिन दर्शन तुम्हरे मेरे प्यारे ।
सहत रहूँ दुख भारे हो ॥ ५ ॥
बिन दरशन मोहि नेक न भावे ।
यह जग संसारे हो ॥ ६ ॥
दर्शन देव और बचन सुनाओ ।
गुर मेरे अगम अपारे हो ॥ ७ ॥
सुनो पुकार मेरी अब जल्दी ।
सतगुर दीन दयारे हो ॥ ८ ॥
मेहर करो मानो मेरी बिनती ।
कीजे मम उपकारे हो ॥ ९ ॥
रहूँ अचिंत मगन निज मन मैं ।
नित तुम दरस निहारे हो ॥ १० ॥
अबही दया करो मेरे दाता ।
मैं चरनन बलिहारे हो ॥ ११ ॥
शुकर करूँ और नित गुन गाऊँ ।
घट मैं देख बहारे हो ॥ १२ ॥
दरस अधार जियत रहूँ प्यारे ।
राधास्वामी सत करतारे हो ॥ १३ ॥

शब्द ३

बिन दरशन कल नाहिँ पड़े ।
मेरे गुर प्यारे हो ॥ टेक ॥
जब से मैं बिछड़ी चरन कँवल से ।
चैन न पाया नहिँ धीर धरे ॥ १ ॥
निस दिन सोच रहे यहि मन मैं ।
भौसागर अब कैसे तरे ॥ २ ॥
काल अनेकन बिघन लगाये ।
चिन्ता मैं दिन रात जरे ॥ ३ ॥
भजन भक्ति कु बन नहिँ ावे ।
मन माया से नित्त डरे ॥ ४ ॥
हे सतगुर सब बिघन हटा ो ।
तुम बिन को दया रे ॥ ५ ॥
राधास्वामी मेहर से दर्शन दीजे ।
तब मेरा सब ाज सरे ॥ ६ ॥

शब्द ४

रत प्यारी बँध गइ हो ।
जगत मैं भोगन सँग ॥ १ ॥

भूल गइ निज घर अपना हो ।
धार रहि अद्भुत माया रंग ॥ २ ॥
मिलैं जब सतगुर दाता हो ।
निकालैं मन की सभी तरंग ॥ ३ ॥
दया कर बचन सुनावैं हो ।
सिखावैं गुर भक्ती का ढंग ॥ ४ ॥
शब्द अभ्यास करावैं हो ।
चढ़े तब घट मैं उमँग उमंग ॥ ५ ॥
सरन दे काज बनावैं हो ।
बसावैं राधास्वामी प्रीत अँग अंग ॥६॥

शब्द ५

सुरत निज घर बिसरानी हो ।
जगत मैं पाय कुसंग ॥ १ ॥
रहे मन इंद्री सँग भरमाय ।
उठावत नित २ नई तरंग ॥ २ ॥
गुरू बिन कौन सम्हारे याहि ।
करावैं वोही मन से जंग ॥ ३ ॥

मेहर से मन का मुख मोड़ैं ।
चढ़ावैं सूरत अधर उमंग ॥ ४ ॥
छुटे तब यह औघट घाटा ।
मिटैं तब मन की सबहि उचंग ॥ ५ ॥
मेहर प्यारे राधास्वामी की पावे ।
प्रेम का धारे अचरज रंग ॥ ६ ॥

—:o:—

शब्द ६

आओ री सखी चलो गुर के पासा ।
भक्ति दान आज लीजिये ॥ १ ॥
जीव उबारन सतगुर आये ।
सतसँग उनका कीजिये ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत धार चरनन में ।
तन मन भेंट धरीजिये ॥ ३ ॥
दृष्ट जोड़ उन दर्शन करना ।
चित दे बचन सुनीजिये ॥ ४ ॥
बचन कहो चाहे अमृत धारा ।
उमँग २ घट पीजिये ॥ ५ ॥

सुन सुन बचन खिलत घट मनुवाँ ।
हियरे उमँग भरीजिये ॥ ६ ॥
कूड़ देख जग का परमारथ ।
करम धरम तज दीजिये ॥ ७ ॥
सुरत शब्द का ले उपदेशा ।
घट मैं बिलास करीजिये ॥ ८ ॥
अधर चढ़त सुत हुइ मगनानी ।
मनुवाँ धुन सँग रीझिये ॥ ९ ॥
भक्ति महातम महिमा जानी ।
प्रेम रंग घट भीजिये ॥ १० ॥
समरथ सतगुर राधास्वामी पाये ।
सीस चरन मैं दीजिये ॥ ११ ॥

शब्द ७

—:o:—

आओ री सखी चलो गुर सतसँग मैं ।
जीव का काज बनाई ॥ टेक ॥
गिरही पंडित शेख़ और भेषा ।
सब मुए घर २ पिछली टेका ॥

पूजैं देबी देव अनेका ।
जनम जनम भरमाई ॥ १ ॥
राधास्वामी चरनन धर परतीती ।
सतगुर से कर गहरी प्रीती ॥
या बिधि मन माया को जीती ।
काल को मार गिराई ॥ २ ॥
सतसँग कर ले गुर उपदेशा ।
सुरत शब्द में करो प्रवेशा ॥
जनम मरन का मिटे ँदेशा ।
घट में करो चढ़ाई ॥ ३ ॥
गुर सरूप का कर दीदारा ।
सुन में सुनो शब्द झनकारा ॥
मुरली बीन बजे जहँ सारा ।
सतगुर दर्शन पाई ॥ ४ ॥
वहाँ से भी फिर धर चढ़ावत ।
अलख अगम का दर्शन पावत ॥
राधास्वामी चरन निहारत ।

नि घर ाय बसाई ॥ ५ ॥

—o—

शब्द ८

ोई है मैं ने न मानूँ ।
मेरा गुर चरनन मन लागा री ॥ १ ॥
दर्शन रूँ नित्त हित चित से ।
(मेरा) रूप रस मन राता री ॥२॥
ाकित जन का सँग नहिँ चाहूँ ।
चाहुँ न भोग ौर रागा री ॥ ३ ॥
दीन ग़रीबी धारूँ चित ँ ।
सेवा मैं रहुँ जागा री ॥ ४ ॥
गुरु तसँग मोहिँ मिला हज मैं ।
क्या कहुँ मैं बड़ भागा री ॥ ५ ॥
मेहर री गुरु मोहिँ म्हाला ।
गत भाव भय त्यागा री ॥ ६ ॥
शब्द डोर गहि सुरत चढ़ाऊँ ।
छिन २ धुन र पागा री ॥ ७ ॥
गुरु बल बहि बिकार नि ारूँ ।

हंस होय मन कागा री ॥ ८ ॥
त्त शब्द मैं रत पिरोऊँ ।
जैसे ई मैं धागा री ॥ ९ ॥
राधा ामी धाम चलूँ फिर सज के ।
वहिँ उन दर्शन ताका री ॥ १० ॥
मेहर री मोहिँ अंग लगाया ।
दीन्हा चल हागा री ॥ ११ ॥

शब्द ९

मेरे राधास्वामी प्यारे हो ।
दर दे बिपति हरो ॥ १ ॥
मेरे राधा ामी प्यारे हो ।
चरन मेरे सीस धरो ॥ २ ॥
मेरे राधास्वामी प्यारे हो ।
हिये मैं मेरे ान बसो ॥ ३ ॥
मैं तो जाऊँ बलिहारी हो ।
मेहर ी दृ ारो ॥ ४ ॥
राधास्वामी लेव बचाई हो ।

ब मैं सरन पड़ो ॥ ५ ॥

—o—

शब्द १०

मेरे राधास्वामी जग　ाये ।
　रन को जीव उबार ॥ १ ॥
घर संत रूप　ौतार ।
सुनाया घट का भेद　पार ॥ २ ॥
शब्द धुन घट में सुना हो ।
ध्यान गुरु रूप　म्हार ॥ ३ ॥
भोग जग जान　　ारा हो ।
त्याग चल शब्द का कर आधार ॥४॥
सरन राधास्वामी धारो हो ।
मेहर से देवें पार उतार ॥ ५ ॥

—o—

भाग १०

शब्द १

रुन झुन रुन झुन हुइ धुन घट में ।
सुन सुन लगी मोहिं प्यारी रे ॥टे ॥
यह धुन　ावत दसम　ार से ।
काल शब्द से न्यारी रे ॥ १ ॥

सुन सुन धुन अब सोया मनुवाँ ।
इंद्री भी थक हारी रे ॥ २ ॥
अधर चढ़त सुत मगन होय कर ।
गुरु चरनन पर वारी रे ॥ ३ ॥
उमँग उमँग सुत गइ सतपुर मेँ ।
दया दृष्टि गुरु डारी रे ॥ ४ ॥
आगे चल पहुँची निज धामा ।
राधास्वामी के बलिहारी रे ॥ ५ ॥

शब्द २

कोइ दिन का है जग मेँ रहना सखी ।
ले सुध बुध घर की ओर चलो ॥टेक॥
यहाँ दूत दिखावेँ ज़ोर घना ।
और इंद्री नाच नचावेँ मना ॥
इन सब को दीजे बेग हटा ।
कुल काल करम का आज दलो ॥१॥
सतगुरु का खोज करो भाई ।
उन चरनन प्रीत धरो आई ॥

प्रेमी जन से मेल मिलाई ।
सत संगत में उमँग रलो ॥ २ ॥
गुरु देवें घर का भेद बता ।
सुत शब्द का दें उपदेश सचा ॥
तब घट में अपने धूम मचा ।
गुरु शब्द से चढ़ कर जाय मिलो ॥३॥
फिर वहाँ से अधर चढ़ो प्यारी ।
धुन मुरली बीन सुनो सारी ॥
मन माया काल रहे वारी ।
सतगुरु की गोद में जाय पलो ॥ ४ ॥
सतपुर से भी फिर अधर चलो ।
घर अलख अगम के पार बसो ॥
लख अचरज लीला मगन रहो ।
राधास्वामी चरन में जाय घुलो ॥ ५ ॥

शब्द ३

भजन मैं कैसे करूँ हेली री ।
भजन मैं कैसे करूँ ॥

बिन मन निश्चल होय ।
भजन मैं कैसे करूँ ॥ टेक ॥

सारी ख़्यालों में भरमे ।
नित वहि कार कमाय ॥
मैं चाहूँ रोकूँ याहि घट में ।
नेक नहीं ठहराय ॥ १ ॥

बहु बिधि याहि समझौती दीन्ही ।
ने हन नहिँ मान ॥
या रो मेरे तगुर प्यारे ।
समरथ पुरुष जान ॥ २ ॥

भोग बासना दूर नि रो ।
धुन ँग सुरत लगाय ॥
मनुवाँ रहे चरन लौ लीना ।
बहुर न कितहूँ जाय ॥ ३ ॥

बिना दया यह मन नहिँ माने ।
करिये केती घाल ॥
राधास्वामी हैँ तौ छिन मैं मोड़ैं ।

पल में रैं निहाल ॥ ४ ॥

शब्द ४

मैं तो पड़ी री दूर निज घर से ।
मेरा दरशन को जिया तरसे ॥ १ ॥
दि न दि न पिया की याद सतावे ।
जल नैनन से बरसे ॥ २ ॥
दया रैं गुरु पूरे पनी ।
जब पिया पद जाय परसे ॥ ३ ॥
मैं गुरु प्यारे ी रन पडूँगी ।
त ँग रूँ नित डर से ॥ ४ ॥
सुरत शब्द की जुगत मा ँ ।
तब घट में ु दरसे ॥ ५ ॥
चढूँ धर ल ँ रूप पिया ा ।
तब मन सूरत रसे ॥ ६ ॥
राधा ामी दया ाज हु ा पूरा ।
जाय मिली निज बर से ॥ ७ ॥

शब्द ५

भक्त का पंथ निराला है ॥ टेक ॥
भक्तन के भगवंत की महिमा ।
और सकल जंजाला है ॥ १ ॥
जो भक्ती संतन ने भाषी ।
वही तो सब से बाला है ॥ २ ॥
उनका प्रीतम कुल का करता ।
राधास्वामी दीन दयाला है ॥ ३ ॥
और उपाश सकल जग माहीं ।
अंश कला पुर्ष काला है ॥ ४ ॥
इनके संग उबार न होई ।
कटे न माया जाला है ॥ ५ ॥
मिल सतगुर जो शब्द कमावे ।
वही खोले घट ताला है ॥ ६ ॥
प्रेम भक्ति की महिमा भारी ।
जो धारे सोइ आला* है ॥ ७ ॥
अस प्रेमी प्रीतम से अपने ।
जाय मिले दरहाला† है ॥ ८ ॥

* ऊँचा † जल्दी ।

राधास्वामी दयाल भक्त को अपने ।
मेहर से आप सम्हाला है ॥ ८ ॥

शब्द ६

मनुवाँ मेरा सोवे जगत में ।
जगा देव जी ॥ टेक ॥
गुर सतसँग में ले चल सजनी ।
बचन सुना देव जी ॥ १ ॥
गहरी प्रीत बसाय हिये में ।
चरन लगा लेव जी ॥ २ ॥
दया करो देव शब्द उपदेशा ।
मरम जना देव जी ॥ ३ ॥
तब जागे यह सोता मनुवाँ ।
अधर चढ़ा देव जी ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन निहारूँ ।
काज बना देव जी ॥ ५ ॥

शब्द ७

हे मेरे मित्रा मनुवाँ ।
क्यौं न चले निज देश ॥ टेक ॥
या तन मैं नित दुख सुख सहना ।
छोड़ो यह परदेश ॥ १ ॥
बिन सतसँग घर भेद न पावे ।
ले गुरु से उपदेश ॥ २ ॥
शब्द जुगत ले नित्त कमाओ ।
काटो करम कलेश ॥ ३ ॥
सुरत चढ़ाय गगन मैं धाओ ।
छूटे माया लेश ॥ ४ ॥
मान सरोवर कर अशनाना ।
धारो हंसा भेश ॥ ५ ॥
भँवर गुफा की बंसी बाजी ।
द्याल देश का मिला सँदेश ॥ ६ ॥
सत्तलोक सतपुरुष रूप लख ।
राधास्वामी चरन करो परवेश ॥ ७ ॥

—:o:—

शब्द ८

कौन बिधि मनुआँ रोका जाय।
जतन कोइ देव बताय ॥ १ ॥
मौत का डर जब मन मैं आय।
नर्क का भय जब चित्त समाय ॥ २ ॥
दुखन से जियरा जब घबराय।
खोज सतसँग मैं करे बनाय ॥ ३ ॥
गुरू और साध से ले उपदेश।
सुरत मन घट धुन संग लगाय ॥ ४ ॥
मेहर से घट मैं परचा पाय।
प्रीत गुर दिन दिन बढ़ती जाय ॥५॥
सहज मैं करम धरम छुटकाय।
भोग इंद्रिन के नहीं सुहाय ॥ ६ ॥
दया गुरु तब मन होय निश्चल।
शब्द सँग सूरत अधर चढ़ाय ॥ ७ ॥
सरन दे राधास्वामी गुरु दातार।
मेहर से दें निज घर पहुँचाय ॥ ८ ॥

शब्द ९

मनुवाँ अनाड़ी से कह दीजो ।
जाव बसो चौरासी देश ॥ टेक ॥
मैं तो अब तेरा संग तियागा ।
जाउँगी पिया के देश ॥ १ ॥
चलना होय तो अबहि चलो घर ।
छोड़ो जग के ऐश ॥ २ ॥
नहिं फिर जनम २ पछताओ ।
बाँधेंगे जम गह केश ॥ ३ ॥
चित से चेत गहो गुरु सरना ।
छूटे काल कलेश ॥ ४ ॥
शब्द डोर गहि चढ़ो गगन पर ।
धारो हंसा भेष ॥ ५ ॥
नित गुन गाओ नाम पुकारो ।
राधास्वामी पूरन धनी धनेश ॥ ६ ॥

शब्द १०

मनुवाँ अनाड़ी को समझाओ ।
क्यों करे हमारी हान (आपनी हान) ॥१॥

जनम जनम किया भोग बिलासा।
छोड़ी न अपनी बान ॥ २ ॥
दुख सुख बहु बिधि भोगत रहिया।
गुरु की सीख न मान ॥ ३ ॥
दुर्लभ नर देही फिर पाई।
अब तो चेत अजान ॥ ४ ॥
शब्द शोर नित घट में होता।
सुनो ज़रा दे कान ॥ ५ ॥
गुरु दयाल अब भेंटे आई।
कर उनकी पहिचान ॥ ६ ॥
मेहर से घर का भेद सुनावें।
चित्त लगा सुन तान ॥ ७ ॥
त्रिकुटी जाय बसो तुम प्यारे।
तीन लोक का राज कमान ॥ ८ ॥
हम पहुँचें जहँ राधास्वामी धामा।
धर उन चरनन ध्यान ॥ ९ ॥

शब्द ११

—:o:—

हे मेरे समरथ साईं ।
निज रूप दिखाओ ॥ १ ॥
हे मेरे प्यारे दाता ।
निज मेहर कराओ ॥ २ ॥
मैं तड़प रहूँ दिन राती ।
मेरी धीर बँधाओ ॥ ३ ॥
तुम बिन मोहिं सुख नहिं चैना ।
क्यों देर लगाओ ॥ ४ ॥
आस २ में बहु दिन बीते ।
अब मेरी आस पुराओ ॥ ५ ॥
यों ही उमर जाय मेरी बीती ।
कब तक तरसाओ ॥ ६ ॥
दरस दिखाय हरो मन पीड़ा ।
राधास्वामी काज बनाओ ॥ ७ ॥

—•—

शब्द १२

सखी री मैं जाऊँगी घर ।
नहिं ठहरूँगी माया देश ॥ टेक ॥

घर तो मेरा ऊँच से ऊँचा ।
जहँ नहिँ काल कलेश ॥ १ ॥
नहिँ वहँ ब्रह्म और पारब्रह्म ।
नहिँ वहँ ब्रह्मा बिश्नु महेश ॥ २ ॥
आतम परमातम नहिँ दोई ।
देबी देव न गौर गनेश ॥ ३ ॥
राधास्वामी जहँ सदा बिराजैं ।
धारैं अगम अलख सत भेष ॥ ४ ॥
हंसन की जहँ सोभा भारी ।
करते वहँ सद आनँद ऐश ॥ ५ ॥
बिन गुर दया कोई नहिँ पहुँचे ।
गुरु चरनन मैं करूँ अदेश ॥ ६ ॥
राधास्वामी प्यारे सतगुर मेरे ।
सुफल करी मेरी अब के बैस ॥ ७ ॥

शब्द १३

जो मेरे प्रीतम से प्रीत करे ।
मोहिँ प्यारा लागे री ॥ १ ॥

जो मेरे प्रीतम की सेवा धारे ।
वहि दिन दिन जागे री ॥ २ ॥
जो मेरे प्रीतम की महिमा गावे ।
मोहिँ अधिक सुहावे री ॥ ३ ॥
जो मेरे प्रीतम के चरनन लागे ।
वहि जग से भागे री ॥ ४ ॥
जो मेरे प्रीतम का रूप निहारे ।
वहि छवि ताके री ॥ ५ ॥
जो मेरे प्रीतम का शब्द सम्हारे ।
गुरु दर झाँके री ॥ ६ ॥
जो मेरे प्रीतम की सरन सम्हारे ।
वहि घर जावे री ॥ ७ ॥
जो मेरे प्रीतम का नाम पुकारे ।
सोइ निज धाम सिधारे री ॥ ८ ॥
भौजल से जो तरना चाहे ।
राधास्वामी २ गावे री ॥ ९ ॥

—०—

शब्द १४

भोग बासना छोड़ पियारे ।
इस मैं क्या फल पावेगा ॥ १ ॥
मेहनत करे रात दिन जग मैं ।
अंत को ख़ाली जावेगा ॥ २ ॥
भाई बंधु और कुटुँब क़बीला ।
कोई काम न आवेगा ॥ ३ ॥
यह सब हैं स्वारथ के संगी ।
अंत को फिर पछतावेगा ॥ ४ ॥
गुरु सतसँग मैं लगन लगा ले ।
भेद वहाँ तू पावेगा ॥ ५ ॥
कर अभ्यास प्रेम से निस दिन ।
घट मैं आनँद पावेगा ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन धार दृढ़ मन मैं ।
भौजल पार सिधारेगा ॥ ७ ॥

शब्द १५

जगत जीव सब होली पूजैं ।
साधू होला गावैं री ॥ १ ॥

अबीर गुलाल उड़ावत चालैं ।
प्रेम रंग घट लावैं री ॥ २ ॥
बिरह अनुराग की धारा भारी ।
हिय में नित उमँगावैं री ॥ ३ ॥
जो जिव चरन सरन में आवैं ।
उनका भाग जगावैं री ॥ ४ ॥
राधास्वामी चरन धार परतीती ।
सतगुर शब्द मनावैं री ॥ ५ ॥
शब्द अभ्यास करत नित घट में ।
जग देह भाव भुलावैं री ॥ ६ ॥
जग जीवन को दया धार कर ।
राधास्वामी नाम सुनावैं री ॥ ७ ॥

शब्द १६

सतगुर प्यारी चरन अधारी ।
सुन २ करती आई हो ॥ १ ॥
उमँग २ कर सेवा करती ।
धाउँ २ धाउँ २ धाई हो ॥ २ ॥

गुरु ारत र मगन हुई ब ।
घन घन घंट बजाई हो ॥ ३ ॥
प्रीत सहित परशादी ले र ।
ाउँ र ाउँ र ाई हो ॥ ४ ॥
राधास्वामी दया री अब ।
रुन झुन शब्द सुनाई हो ॥ ५ ॥

शब्द १७

माया रूप नवीन धार र ।
त ग मैं ाई ॥
मान भरे रहि बोल बचन ।
अहंकार रहा चित मैं छाई ॥
मैं आऊँ मैं आऊँ मैं आऊँ शोर मचाई ॥१॥
काल भी दूजा रूप धार कर ।
अपना मत गाई ॥
क्रोध बिरोध ईरषा झगड़ा ।
चहुँ दिस फैलाई ॥
बोलत फूँ फूँ फूँ फूँ झक लाई ॥ २ ॥

त ँग मैं नहिँ मिला दाव तब ।
ाप मैं झगड़ा ठाना ॥
झूठी रार बढ़ाय जीव को ।
ाहत भरमाना ॥
घुर २ रत ऐँठते दो ।
र ूँ दि लाई ॥ ३ ॥
प्रेमी जन स दे हाल ।
मिरन मैं लौ लाई ॥
राधास्वामी नाम सम्हार ।
जाल ो दीन्हा तुड़वाई ॥
ल रहा ब झूर ।
रही माया भी मुरझाई ॥ ४ ॥

—०—

ब २२

भाग १

शब्द १

रतिया खे त बा मान ।
चरन मैं गुरू के उमँग उमंग ॥ १ ॥

दूर ही दूर रहा जग माहिँ।
मेहर हुई पाया गुरू का संग ॥ २ ॥
निरख गुरू चरन नवीन बिलास।
चढ़त नित नया प्रेम का रंग ॥ ३ ॥
बचन सुन मनुवाँ हरष रहा।
भरम और संसय होते भंग ॥ ४ ॥
सरन राधास्वामी दृढ़ करता।
भाव और भक्ति हिये धरता ॥ ५ ॥

———•———

शब्द २

सुरतिया धूम मचाय रही।
करें गुरू क्यों नहिँ दया बिचार ॥ १ ॥
बिनय करत मोहिँ बहु दिन बीते।
सहत रहे दुख मन बीमार ॥ २ ॥
बिन गुरू दरस दवा नहिँ कोई।
माँग रहा दर्शन हर बार ॥ ३ ॥
जस होय मौज तुम्हारी प्यारे।
अंतर बाहर देव दीदार ॥ ४ ॥

जो अभी मेल न हो सतसँग मैं ।
घट मैं दरशन रहूँ निहार ॥ ५ ॥
चाहे अपना रूप दिखाओ ।
चाहे सुनाओ शब्द अपार ॥ ६ ॥
जस तस मन कुछ शान्ती पावे ।
सोई जुगत करो दातार ॥ ७ ॥
तुम्हरे घर कुछ कमी न होई ।
खोलो दया मेहर भंडार ॥ ८ ॥
किनका प्रेम का बख़्शिश दीजे ।
निस दिन तड़प रहूँ लाचार ॥ ९ ॥
पिरथम दया करी मोपै भारी ।
अब क्यों हुए कठोर दयार ॥ १० ॥
मेहर करो मोपै जल्दी प्यारे ।
जस तस मन को लेव सम्हार ॥ ११ ॥
दीन दयाल जीव हितकारी ।
प्यारे राधास्वामी मेरे प्राण अधार ॥१२॥

———•———

शब्द ३

सुरतिया भाव सहित ।
आई सुन गुर महिमा सार ॥ १ ॥
दरशन कर मन में हरषानी ।
सुन २ बचन बढ़ा हिये प्यार ॥ २ ॥
नित्त बिलास देख मगनानी ।
दर्शन नित्त नवीन निहार ॥ ३ ॥
सतसँग करत भरम सब भागे ।
जग परमारथ कूड़ बिचार ॥ ४ ॥
शब्द भेद पाया सतगुर से ।
सुरत चढ़ावत धुन की लार ॥ ५ ॥
जुगत कमावत होत सफ़ाई ।
मन से आसा भोग निकार ॥ ६ ॥
रहूँ निचिंत सरन गुरु धारूँ ।
राधास्वामी उतारैं भौजल पार ॥ ७ ॥

—:o:—

शब्द ४

सुरतिया उमँग उमँग ।
गुरु आरत करत सम्हार ॥ १ ॥

दीन अधीन चरन में आई ।

बिसरत कृत संसार ॥ २ ॥

प्रीत सहित गुरु सेवा करती

नित्त बढ़ावत प्यार ॥ ३ ॥

सुन सुन महिमा गुरु सतसँग की ।

भाव हिये में धार ॥ ४ ॥

दिन दिन बढ़त चरन बिस्वासा ।

गावत राधास्वामी नाम अपार ॥ ५ ॥

प्रेमी जन से हेल मेल कर ।

गुरु गुन गावत सार ॥ ६ ॥

राधास्वामी महिमा हिये बसावत ।

संसय भरम सब दूर निकार ॥ ७ ॥

शब्द ५

सुरतिया घट में आनँद पाय ।

निरख गुरु भक्ती रीत नई ॥ १ ॥

प्रेमी जन की हालत देखत ।

मन में अचरज करत रही ॥ २ ॥

माँगे गुरु से दया बिशेषा ।
सुरत शब्द की लार लई ॥ ३ ॥
देखे घट में अचरज नूरा ।
सुन्न सुन धुन फिर अधर गई ॥ ४ ॥
ऐसी मेहर करो गुरु दाता ।
घट में नित आनंद लई ॥ ५ ॥
दीन अधीन पड़ी तुम सरना ।
तुम बिन को मोहिँ दान दई ॥ ६ ॥
प्रेम की दात देव मोहिँ प्यारे ।
सुरत चरन में लिपट रही ॥ ७ ॥
और अँदेस न लावे मन में ।
मौज धार नित मगन रही ॥ ८ ॥
प्रेम रंग रहे सुरत रंगीली ।
राधास्वामी सरन पई ॥ ९ ॥

शब्द ६

सुरतिया सिमट गई ।
गुरु दर्शन दृष्टी जोड़ ॥ १ ॥

प्रेम अंग ले करती दर्शन ।
चित चंचलता छोड़ ॥ २ ॥
मन और सुरत जमावत तिल पर ।
सुनती अनहद घोर ॥ ३ ॥
निरख प्रकाश मगन हुई मन में ।
अंतर दृष्टी लाई मोड़ ॥ ४ ॥
गुरु चरनन में प्यार बढ़ावत ।
छोड़त जग का मोर और तोर ॥ ५ ॥
जागत प्रेम सुनत गुरु बानी ।
थकित रहे सब दूत और चोर ॥ ६ ॥
राधास्वामी दयाल दया की भारी ।
आप घटाया काल का ज़ोर ॥ ७ ॥

शब्द ७

सुरतिया सुनत रही ।
नित राधास्वामी बानी सार ॥ १ ॥
दीन चित्त सतसँग में आई ।
धर गुरु चरनन प्यार ॥ २ ॥

मेहर करी गुरु दिया उपदेशा ।
रत शब्द की गती र ॥ ३ ॥
सुरत सम्हार करत
सुनत मगन होय धुन न र ॥ ४ ॥
राधा मी तगुरु हुए द ला ।
दीन जान लिया गोद बिठार ॥ ५ ॥

शब्द ८

रतिया चरज रत रही ।
पिरेमी न । देख बिला ॥ १ ॥
त ग । भय व गौर लज ।
गुरु चरनन में ती बा ॥ २ ॥
भक्ति भाव में नि दिन बरते ।
उमँग सहित रती अभ्या ॥ ३ ॥
प्रीत परस्पर दि र पालत ।
गुरु दर न र ब त हुलास ॥ ४ ॥
हरष २ नती गुरु बचना ।
ध्यान धरत घट होत उजा ॥ ५ ॥

शब्द सुनत सुत चढ़त अधर में ।
त्रिकुटी पहुँची फोड़ अकाश ॥ ६ ॥
सुन्न महासुन भँवर गुफा लख ।
सत्त अलख और अगम निवास ॥ ७ ॥
राधास्वामी धाम पाय मगनानी ।
आज हुई मेरी पूरन आस ॥ ८ ॥

॥ शब्द तीसरा ॥

सुरतिया करत रही ।
गुरु दर्शन सहित उमंग ॥ १ ॥
मोहित हुई सुनत गुरु बचना
चढ़त सवाया रंग ॥ २ ॥
भक्ती रीत लखी अब प्यारी ।
गुरु भक्तन का धारत ढंग ॥ ३ ॥
जग जीवन की प्रीत तियागी ।
प्रेमी जन का करती संग ॥ ४ ॥
छोड़ झिझक करती गुरु सेवा ।
प्रेम गुरू छाया अँग अंग ॥ ५ ॥

याद बढ़ावत नाम पुकारत ।
सहज हटावत सबहि उचंग ॥ ६ ॥
रूप धियावत शब्द सुनावत ।
सुरत चढ़ावत जैसे पतंग ॥ ७ ॥
सुरत खिलावत मन बिगसावत ।
नई उठावत प्रेम तरंग ॥ ८ ॥
काल बिडारत कर्म सुलावत ।
मन माया से लेती जंग ॥ ९ ॥
घट में धावत आनँद पावत ।
हिय उमगावत संसय भंग ॥ १० ॥
झिझक हटावत क़दम बढ़ावत ।
दूत दुष्ट सब होते तंग ॥ ११ ॥
घंटा संख सुनत हरषावत ।
पार चढ़त धस नाली बंक ॥ १२ ॥
गरज मृदंग सुनत चली आगे ।
बेनी न्हावत हंसन संग ॥ १३ ॥
मुरली धुन सुन अधर सिधारी ।
महाकाल रहा दंग ॥ १४ ॥

सत पद पार गई निज घर मैं ।
राधास्वामी धाम अरूप अरंग ॥१५॥
राधास्वामी दिया प्रसन्न होय कर ।
प्रेम प्रसाद और भक्ति उतंग ॥ १६ ॥

शब्द १०

सुरतिया खिलत रही ।
देख गुरु मन मोहन छबि आज ॥१॥
दरशन करत भूल रहि सुध बुध ।
छोड़ दिया सब जग का काज ॥ २ ॥
उमँग २ कर आरत गावत ।
प्रेम का पाया अद्भुत साज ॥ ३ ॥
भक्ति अंग मैं खुल २ बरते ।
छोड़ झिझक और कुल की लाज ॥४॥
राधास्वामी दया से गई भौ पारा ।
तज दिया मन कपटी का राज ॥ ५ ॥

शब्द ३१

सुरतिया वार रही।
तन मन गुरु चरन निहार ॥ १ ॥
बिमल बैराग धार कर मन में।
छोड़ दिया संसार ॥ २ ॥
मोह जाल के बंधन काटे।
गुरु सेवा में रहे हुशियार ॥ ३ ॥
सतसँग बचन धार कर चित में।
मन को छिन २ डारत मार ॥ ४ ॥
भोग अंक को काटत छिन छिन।
राधास्वामी नाम जपत हर बार ॥ ५ ॥
ध्यान लगाय बढ़ावत प्रीती।
शब्द सुनत हियरे धर प्यार ॥ ६ ॥
घंटा संख मचावत शोरा।
छिटक रहा घट जोत उजार ॥ ७ ॥
अनहद शब्द लगा अब गरजन।
चढ़ कर पहुँची गगन मँझार ॥ ८ ॥

द्वारा फोड़ गई अब सुन में ।
न्हाई मानसर मैल उतार ॥ ९ ॥
भँवर गुफा का देख उजारा ।
बीन सुनी सतगुरु दरबार ॥ १० ॥
अलख अगम के पार चढ़ाई ।
राधास्वामी चरन मिला आधार ॥११॥
तन मन तोड़ किया जब सतसँग ।
भोग बासना दई निकार ॥ १२ ॥
गुरु चरनन में प्रीत घनेरी ।
कीन्ही हिये से तन मन वार ॥ १३ ॥
दीन ग़रीबी धार चित्त में ।
मन के मान दिये सब झाड़ ॥ १४ ॥
तब गुरु परसन होय मेहर से ।
अंग लगाया किरपा धार ॥ १५ ॥
अस सतसंग करे जो कोई ।
सोई जावे भौजल पार ॥ १६ ॥
राधास्वामी परम गुरू दातारा ।
पहुँचावें फिर निज घर बार ॥ १७ ॥

होय निचिन्त बसे सुख सागर ।
हर दम राधास्वामी दरस निहार ॥१८॥
अचरज नाम और अचरज रूपा ।
अचरज मेहर का वार न पार ॥ १९ ॥
लख २ भाग सराहत अपना ।
राधास्वामी चरन पकड़ रहि सार ॥२०॥
राधास्वामी दयाल सरन हिये धारी ।
उन मेहर से दिया मेरा काज सँवार ॥२१॥

शब्द १२

सुरतिया हरष रही ।
निरखत गुरु चरन बिलास ॥ १ ॥
बिगसत खेलत संग गुरू के ।
दिन २ बढ़त हुलास ॥ २ ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त चरनन में ।
तजत काम और भोग बिलास ॥ ३ ॥
उमँग २ कर गावत बानी ।
मगन होय रह गुरू के पास ॥ ४ ॥
चित दे सुनत बचन सतसँग के ।

चेत करत घट में अभ्यास ॥ ५ ॥
मन और सुरत सिमट कर चालें ।
तजत देस जहँ माया बास ॥ ६ ॥
तीसर तिल धस सुनती बाजा ।
लखती जहँ वहँ जोत उजास ॥ ७ ॥
गगन ओर धावत सुत प्यारी ।
पावत काल तरास ॥ ८ ॥
अधर चढ़त सुन २ धुन अक्षर ।
सुन में हंसन संग बिलास ॥ ९ ॥
भँवर गुफा धुन सुन गई आगे ।
निज सूरज सँग मिला अभास ॥ १० ॥
अलख अगम लख हुई अचिन्ती ।
मिल गई प्रेमानंद की रास ॥ ११ ॥
प्रेम पियारी सुरत रँगीली ।
प्यारे राधास्वामी की हुई ख़वास ॥१२॥
दरशन कर अति कर मगनानी ।
पाय गई धुर धाम निवास ॥ १३ ॥
प्रेम प्रताप छाय रहा घट में ।

प्रेम स्रूप कि या हिरदे ा ॥१४॥
यह गत त है ग पारा ।
पावे मेहर से ोइ नि दा ॥ १५ ॥
र त ग गहे ामी रना ।
रत ढ़ावे निज ा ा ॥ १६ ॥
सुरत हो तब ा ी ारी ।
ी दौलत पावे ा ॥ १७ ॥
राधा मी मेहर दृष्ट से हेरैं ।
प्रेम दुलार होय ा लू ा ॥ १८ ॥
जो दुर्लभ भक्ति मावे ।
जावे निज घर बिन परिया ॥ १९ ॥
रत निसानी मेरी ामी ँवारी ।
गावत उन गुन ाँ ो ाँ ॥ २० ॥
प्रेम दुलारी शब्द पियारी ।
होय निहाल बैठी चरनन पा ॥२१॥
दयाल सरन ले काज बनाया ।
तज दिया जग का मोह और ा ॥२२॥
प्रेम अधार जियत सुत प्यारी ।

जग से रहती सहज उदास ॥ २३ ॥
घूम हुई भक्ती की भारी ।
करम भरम सब हो गये नाश ॥ २४ ॥
प्रेम अधारी सुरत सिरोमन ।
आरत दीपक करती चास ॥ २५ ॥
सब सखियाँ मिल आरत गावैं ।
राधास्वामी चरनन धर बिश्वास ॥२६॥
दया करी राधास्वामी प्यारे ।
घट घट कीन्हा प्रेम प्रकाश ॥ २७ ॥

—०—

शब्द १३

सुरतिया ध्याय रही ।
गुरू रूप हिये धर प्यार ॥ १ ॥
शब्द सुनत हरषत नित घट में ।
परखत मेहर अपार ॥ २ ॥
मगन होय नित गुरू गुन गावत ।
हिये से करत पुकार ॥ ३ ॥
वाह वाह मेरे गुरू दयाला ।

वाह वाह मेरे पिता दयार ॥ ४ ॥
वाह वाह मेरे प्यारे राधास्वामी ।
वाह वाह मेरे सत्त करतार ॥ ५ ॥
जस जस मेहर री मेरे ऊपर ।
स स गाऊँ तुम गुन सार ॥ ६ ॥
कहत कहत मोसे हत न आवे ।
नित नित रहूँ मैं शुकर गुज़ार ॥ ७ ॥
लिपट रहूँ चरनन मैं हित से ।
भी न छोड़ूँ अमृत धार ॥ ८ ॥
चित्त रहे चरनन लौलीना ।
ाल रम बैठे सब हार ॥ ९ ॥
मैं अति दीन हीन ौर निरबल ।
जियत रहूँ राधास्वामी अधार ॥ १० ॥
केल रूँ नित उनके संगा ।
राधास्वामी बल ले रहूँ हुशियार ॥११॥
मैं बाल उन सरन धारा ।
राधास्वामी किया मेरा निज उपकार ॥१२॥

आपहि खैंच लिया सतसँग मेँ।
आप दिखाया निज दीदार ॥ १३ ॥
राधास्वामी महिमा कहत न आवे।
राधास्वामी २ कहूँ हर बार ॥ १४ ॥
चरन अमीँ रस पियत रहूँ नित।
राधास्वामी प्रेम रहूँ सरशार ॥ १५ ॥

शब्द १४

सुरतिया सोच करत।
कस जाऊँ भौ के पार ॥ १ ॥
भजन ध्यान मो से बन नहिँ आवे।
काल करम बरियार ॥ २ ॥
मन मलीन गुरु कहन न माने।
छोड़त नहीँ बिकार ॥ ३ ॥
जगत आस मेँ रहे बँधाना।
और भरम रहा भोगन लार ॥ ४ ॥
चिन्ता मेँ रहे अधिक भुलाना।
गुरु का बचन न माने सार ॥ ५ ॥

जग कारज नित प्रति सतावें।
चिन्ता ंग रहे बीमार ॥ ६ ॥
गुरु दयाल नित हत पु ारी।
घट ें ले उपदे म्हार ॥ ७ ॥
यह न चंच बूझ न ा ।
जग में भरमे जुगत बिसार ॥ ८ ॥
मुझ निरबल ो पे ावे।
मेहर रो हे गुरू दयार ॥ ९ ॥
ऐ ा दया रो मेरे दाता।
रनन ें रहूँ नित हुशि ार ॥ १० ॥
ान धरत ोहिं मिले नंदा।
शब्द सुनत मन होय रशार ॥ ११ ॥
ाल बिघन ब दूर हटा ो।
मेहर से मुझ ो लेव सम्हार ॥ १२ ॥
चरन रन हिये दृ. र धारूँ।
रहूँ दया ा भरो ा धार ॥ १३ ॥
गुरु दयाल ब ाज सँवारें।
बिरथा चिन्ता देउँ बि ार ॥ १४ ॥

जो कुछ होय मौज से गुरु के ।
ता में परखूँ दया बिचार ॥ १५ ॥
भक्ती रीत सम्हारूँ निस दिन ।
प्रेम की दौलत पाऊँ अपार ॥ १६ ॥
दर्शन की रहूँ उमँग जगाई ।
सेवा करूँ हिये धर प्यार ॥ १७ ॥
परमारथ का भाग बढ़ाऊँ ।
गाऊँ गुरु गुन बारम्बार ॥ १८ ॥
सुरत रहे चरनन सँग लागी ।
घट में निरखूँ बिमल बहार ॥ १९ ॥
अपना कर मोहिं लेव दयाल ।
मन के दूर बिकार निकार ॥ २० ॥
काल करम से छूट छुड़ाओ ।
निरमल कर लेव गोद बिठार ॥ २१ ॥
यह अरज़ी मानो अब मेरी ।
राधास्वामी प्यारे सत करतार ॥ २२ ॥

—o—

शब्द १५

सुरतिया उमँग भरी ।
होली खेलत आज नई ॥ १ ॥
जग का मैला रंग निकारत ।
निरमल धार बही ॥ २ ॥
हिये में निस दिन प्रीत बसावत ।
जग का मोह बिसार दई ॥ ३ ॥
प्रेम रंग ले खेलत गुरु से ।
अचरज होली आज सही ॥ ४ ॥
सुरत रँगीली चढ़त अधर में ।
गगना ओर गई ॥ ५ ॥
गुरु स्वरूप का दर्शन कर के ।
उमँग २ अब चरन पई ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया निरख कर ।
हिये में मगन भई ॥ ७ ॥

———o———

शब्द १६

सुरतिया मगन हुई ।
घट शब्द का आनँद पाय ॥ १ ॥

तन मन से गुरु सेवा करती ।
हिये में उमँग जगाय ॥ २ ॥
सतसँग बचन चित्त से सुनती ।
मनन करत मन को समझाय ॥ ३ ॥
करनी की अभिलाषा भारी ।
सुरत सम्हार शब्द सँग धाय ॥ ४ ॥
मन को मोड़त तन को तोड़त ।
अमृत रस घट पियत अघाय ॥ ५ ॥
जब तब माया देत झकोले ।
गुरु का बल ले ताहि हटाय ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया परख कर घट में ।
सहज २ जिव काज बनाय ॥ ७ ॥

—o—

भाग २

शब्द १

पिरेमी सुरत रँगीली आय ।
दिया सतसँग में प्रेम जगाय ॥ १ ॥
दरस गुरु पाय मगन होती ।
बचन सुन मल हिये से धोती ॥ २ ॥

बढ़ावत सतसँगियन से प्रीत ।
पकावत हिये में गुरु परतीत ॥ ३ ॥
हरषती निरखत गुरु सजना ।
फड़कती गावत गुरु बचना ॥ ४ ॥
गुरू की सोभा निरख निहार ।
मगन होय डारत तन मन वार ॥ ५ ॥
भाव नित नया नया दिखलाती ।
गुरू की छबि पर बल जाती ॥ ६ ॥
लगा अब रूखा जग ब्योहार ।
मिला परमारथ सार का सार ॥ ७ ॥
प्रेम का किनका गुरु दीना ।
सुरत रहे चरनन लौ लीना ॥ ८ ॥
बिनय करूँ राधास्वामी चरनन में ।
प्रीत रहे बाढ़त दिन दिन में ॥ ९ ॥
मिले नित घट में रस आनंद ।
कटें सब काल करम के फंद ॥ १० ॥
सुरत रहे चरनन में लागी ।
रहे मन निस दिन अनुरागी ॥ ११ ॥

हुए परशन राधा ामी दयाल ।
मेहर से कीन्हा मोहिँ निहाल ॥ १२ ॥
उमँग कर ारत सामाँ लाय ।
धरे गुरू के सन्मुख आय ॥ १३ ॥
चमक ौर दमक के बस्तर लाय ।
मगन होय गुरू को दिये पहिनाय ॥१४॥
निर बि हरख हु ा भारी ।
दया पर ि न ि न बलहारी ॥ १५ ॥
ारती गाई उमँग उमंग ।
रत मन रँगे प्रेम के रंग ॥ १६ ॥
हंस सब जुड़ मिल नाच रहे ।
मधुर धुन बाजे बाज रहे ॥ १७ ॥
हुई त ँग में भारी धूम ।
नाच रहे सब मिल झूम ौर घूम ॥१८॥
प्रेम की बरषा चहुँ दिस होय ।
सुरत रही ब की चरन समोय ॥१९॥
बुध देह बि ार रहे ।
गुरू पर तन मन वार रहे ॥ २० ॥

सुरत मन उमँग अधर चढ़ते ।
गगन में गुरु दर्शन करते ॥ २१ ॥
अजब यह औसर आया हाथ ।
सुरत मन नाचत गुरु के साथ ॥ २२ ॥
सुन्न और महा सुन्न के पार ।
सुरत गई सत्त पुरुष दरबार ॥ २३ ॥
अलख और अगम के पार ठिकान ।
चरन राधास्वामी परसे आन ॥ २४ ॥
दया राधास्वामी की भारी ।
हुए सब प्रेमी सुखियारी ॥ २५ ॥

—:o:—

शब्द २

पिरेमन लाई आरती साज ।
दिया गुरु भक्ति भाव का दाज ॥ १ ॥
प्रीत हिये अंतर जाग रही ।
सुरत घट धुन सँग लाग रही ॥ २ ॥
काल ने दीन्हा बहु झकझोर ।
मेहर हुई कट गया उसका ज़ोर ॥ ३ ॥

दया से करती नित सतसंग ।
बचन सुन बाढ़त चित्त उमंग ॥ ४ ॥
जगत का देखा झूठा खेल ।
करूँ अब प्रेमी जन से मेल ॥ ५ ॥
जगत जिव स्वारथ के बंदे ।
फँसे सब काल करम फंदे ॥ ६ ॥
सुद्ध परमारथ की नहिँ लाय ।
संत का बचन न चित ठहराय ॥ ७ ॥
करैँ गुरु निंद्या दिन और रात ।
पिरेमी जन से करैँ उतपात ॥ ८ ॥
संग उन चित से नहिँ चाहूँ ।
बचन उन नेक न मन लाऊँ ॥ ९ ॥
करूँ गुरु भक्ती उमँग उमंग ।
प्रेम का धारूँ हिरदे रंग ॥ १० ॥
करैँ प्यारे राधास्वामी मेरी सहाय ।
काल के बिघन से लेहिँ बचाय ॥ ११ ॥
प्रीत चरनन की नित्त बढ़ाय ।
सुरत मन देवैँ अधर चढ़ाय ॥ १२ ॥

हंसदल लखे जोत उजियार ।
संख और घंटा संग पियार ॥ १३ ॥
गगन चढ़ सुने गरज मिरदंग ।
सुन्न में बाजे धुन सारंग ॥ १४ ॥
भँवर चढ़ पहुँची सतपुर धाय ।
पुर्ष का दर्शन अद्भुत पाय ॥ १५ ॥
परे चढ़ निरखा राधास्वामी धाम ।
वही है अलख अगम अनाम ॥ १६ ॥
मेहर बिन कस पावे यह ठाम ।
दया बिन मिले नहीं निज नाम ॥१७॥
दिया मेरा राधास्वामी भाग जगाय ।
मेहर से लीन्हा मोहिं अपनाय ॥१८॥
चरन में राधास्वामी खेलूँ नित्त ।
धार रहूँ राधास्वामी बल निज चित्त ॥१९॥

———:o:———

शब्द ३

बिरहनी सुरत हिये धर प्यार ।
उमँग कर आई गुरु दरबार ॥ १ ॥

नेम से दरशन करती नित्त ।
चरन में धरती हित कर चित्त ॥ २ ॥
रहे यह चिन्ता चित्त समान ।
जीव का होवे कस कल्यान ॥ ३ ॥
करत नित प्रति अभ्यास सम्हार ।
सुधारत मन को इच्छा मार ॥ ४ ॥
भोग जग चित से देत बिसार ।
बचन गुरु सुन २ करत बिचार ॥ ५ ॥
तजत छिन २ मन माया देश ।
शब्द में करत सुरत परवेश ॥ ६ ॥
संख और घंटा धुन सुनती ।
सुरत मन खैंच अधर धरती ॥ ७ ॥
सूर लख चंद्र का दर्शन पाय ।
गुफा चढ़ सोहं शब्द सुनाय ॥ ८ ॥
पुर्ष का दर्शन सतपुर कीन ।
सुनी वहँ मधुर २ धुन बीन ॥ ९ ॥
परे तिस राधास्वामी दर्शन पाय ।
लिया मोहिं अपने चरन लगाय ॥१०॥

रती चरनन में धारी ।
मेहर सोधे राधास्वामी ी भारी ॥११॥
काज मेरा सब बिधि पूरा ीन ।
सुरत हुई राधास्वामी रनन लीन ॥१२॥

शब्द ४

गुरू की धर हिये में परतीत ।
बढ़ावत दिन दिन चरनन प्रीत ॥ १ ॥
ध्यान धर मन होवत निश्चल ।
भजन कर चित होवत नि ल ॥ २ ॥
रन गह रम होत निष्फल ।
बचन सुन दूर भरम ल ल ॥ ३ ॥
जगत का देख तमाशा ाय ।
भोग जग आसा गई बिला ॥ ४ ॥
धरत मन दर्शन की ा ा ।
चहत मन चरनन में बा ा ॥ ५ ॥
शब्द का मारग जाना ार ।
नेम से करत भ्या म्हार ॥ ६ ॥

मेहर गुरु माँग रहा निस दिन ।
सुरत मन घट में करें दर्शन ॥ ७ ॥
सिमट कर चढ़ें गगन की ओर ।
सुनें धुन घंटा और घनघोर ॥ ८ ॥
परे जाय सुन में निरख बिलास ।
अधर चढ़ करें भँवर गढ़ बास ॥ ९ ॥
परे लख सत्त पुरुष का नूर ।
अलख और अगम का पाय सरूर ॥१०॥
अचल घर राधास्वामी चरन रली ।
मेहर हुई पिय से जाय मिली ॥ ११ ॥

———०———

शब्द ५

प्रेम गुरु रहा हिये में छाय ।
सुरत अब नई २ उमंग जगाय ॥ १ ॥
चहत नित सतगुरु का सतसंग ।
सुरत मन भीँज रहे गुरु रंग ॥ २ ॥
बचन सुन होत मगन मन सूर ।
करम और भरम हुए सब दूर ॥ ३ ॥

निरखती मन इंद्री की चाल ।
करन चहे दूतन को पामाल ॥ ४ ॥
निरख कर धारत गुरु का ढंग ।
परख कर झाड़त माया रंग ॥ ५ ॥
जगत का परखत फीका रंग ।
समझ कर त्यागत सबहि कुसंग ॥ ६ ॥
चरन गुरु हर दम याद बढ़ाय।
रूप गुरु रखती हिये बसाय ॥ ७ ॥
काल रहा डारत बिघन अनेक ।
काट रहि धर सतगुरु की टेक ॥ ८ ॥
गढ़त मेरी राधास्वामी करते आप ।
दया का अपने धर कर हाथ ॥ ९ ॥
पिता प्यारे राधास्वामी दीनदयाल ।
अनेक बिधि कर रहे मेरी सम्हाल ॥१०॥
गाऊँ क्या महिमा उन की सार ।
दई मोहिं चरन सरन कर प्यार ॥११॥
बिना राधास्वामी और न कोय ।
लेय जो मन मलीन को धोय ॥ १२ ॥
अबल मैं कस उन गुन गाऊँ ।

चरन पर नित बल बल जाऊँ ॥ १३ ॥
भरोसा मेहर ा हियरे धार ।
जिऊँ मैं राधास्वामी नाम अधार ॥१४॥
तड़प दर्शन की उठत हर बार ।
बिबस मैं बैठ रहूँ मन मार ॥ १५ ॥
चरन गहि ंतर मैं धाऊँ ।
दरस राधास्वामी वहँ पाऊँ ॥ १६ ॥
व रो प्यारे राधास्वामी ऐसी मेहर ।
सुरत मन चरनन मैं रहैं ठहर ॥ १७ ॥
पाऊँ रस घट मैं नित्त नवीन ।
केल करूँ धुन सँग जस जल मीन ॥१८॥
गाऊँ नित आरत प्रेम भरी ।
सुरत रहे राधास्वामी चरन ड़ी ॥१९॥
करो प्यारे राधास्वामी मेहर बनाय ।
लेव सब जीवन चरन लगाय ॥ २० ॥
करैं तुम आरत धर कर प्यार ।
गायैं नित राधास्वामी नाम दयार ॥२१॥

—०—

शब्द ६

करूँ गुरु सतसँग नित्त अली।
खटक परमारथ चित्त खली॥ १॥
कुटँब सँग करूँ सतसंग सम्हार।
शब्द का मन मैं धारूँ प्यार॥ २॥
जगत का भय और भाव तियाग।
करूँ भोगन से अब बैराग॥ ३॥
चरन मैं राधास्वामी धर अनुराग।
सुरत मन दोऊ उठे अब जाग॥ ४॥
शब्द धुन सुन सुन होत मगन।
कहत राधास्वामी सतगुरु धन धन॥५॥
बिरह दरशन की जाग रही।
जगत से छिन २ भाग रही॥ ६॥
काल ने डाले बिघन अनेक।
काट दिये गह सतगुरु की टेक॥ ७॥
उमँग सेवा की हिये बसाय।
करूँ मैं जब तब औसर पाय॥ ८॥

गुरू से माँगूँ प्रेम की दात ।
दया का चाहूँ सिर पर हाथ ॥ ९ ॥
दीनता साँची मन में लाय ।
रहूँ नित गुरु की भक्ति कमाय ॥ १० ॥
पिरेमी जन से नाता जोड़ ।
रहूँ जग जीवन से मुख मोड़ ॥ ११ ॥
उमँग कर आरत गाऊँ नित्त ।
सरन राधास्वामी धारूँ चित्त ॥ १२ ॥

— ० —

शब्द ७

प्रेम की महिमा क्या गाई ।
हिये में सीतलता ाई ॥ १ ॥
प्रेम जिस घट में किया परकास ।
गया तम हुआ शब्द उजियास ॥ २ ॥
पिरीतम हिरदे में बसिया ।
सुरत मन चरन लाग रसिया ॥ ३ ॥
प्रेम राधास्वामी चरनन लाय ।
हिये में निस दिन ानँद पाय ॥ ४ ॥

प्रीत गुरु चरनन आन धरी ।
सुरत घंट धुन सँग गगन भरी ॥ ५ ॥
लगा वाहि गुरु सतसँग प्यारा ।
हुआ मन जग से अब न्यारा ॥ ६ ॥
बचन सुन जग उगलत मनुवाँ ।
चढ़त नित घट मैं गह धुनुवाँ ॥ ७ ॥
सुनत सतसँग की महिमा सार ।
सुरत आई उमगत गुरु दरबार ॥ ८ ॥
प्रीत हिये भर भर करती सेव ।
धरत परतीत चरन गुरु देव ॥ ९ ॥
सुनत गुरु बचन धार अनुराग ।
भोग जग देती मन से त्याग ॥ १० ॥
करत नित भजन बिरह अँग लाय ।
शब्द सँग सूरत नित रस पाय ॥ ११ ॥
दया गुरु घट मैं परख रही ।
चाल मन इंद्री निरख रही ॥ १२ ॥
रूप गुरु हिये मैं ध्याय रही ।
सरन गुरु मन मैं पकाय रही ॥ १३ ॥

पाय घट आनँद चरन बिलास।
चरन गुरु बढ़ता नित बिश्वास ॥१४॥
उमँग अँग आरत गुरु धारी।
हुए अब तन मन सुखियारी ॥ १५ ॥
मेहर की दृष्टि करी गुरु ने।
सुरत मन लागे घट चढ़ने ॥ १६ ॥
तोड़ तिल गई सुरत नभ माहिँ।
जोत लख मिटी काल की दायँ ॥१७॥
गगन चढ़ शब्द गुरू दर्शन।
मिले और वारा तन मन धन ॥ १८ ॥
सुन्न में चढ़ गई सुरत अकेल।
करत वहँ हंसन सँग अब केल ॥१९॥
भँवर में गई महासुन पार।
सुनी धुन सोहं मुरली सार ॥ २० ॥
सत्तपुर दर्शन सतपुर्ष पाय।
बीन धुन सुनत रही हरषाय ॥ २१ ॥
वहाँ से अलख के पार गई।

अगम लख राधास्वामी चरन पई ॥२२॥
वहीं है राधास्वामी का निज धाम ।
परम गुरु संतन का बिसराम ॥ २३ ॥
मिला वहँ अद्भुत भक्ती साज ।
सुरत का हो गया पूरा काज ॥ २४ ॥
दया गुरु मिला निज घर येही ।
शब्द में सूरत जब देई ॥ २५ ॥
करी यहँ आरत राधास्वामी जोर ।
सुरत हुई प्रेम रंग सरबोर ॥ २६ ॥
परम पुर्ष राधास्वामी हुए सहाय ।
लिया मोहिं अपनी गोद बिठाय ॥२७॥

— :o: —

शब्द ८

प्रेम की दौलत अपर अपार ।
प्रेम से मिलता सिरजनहार ॥ १ ॥
प्रेम बिना सब झूँठा ध्यान ।
प्रेम बिना सब थोथा ज्ञान ॥ २ ॥
प्रेम बिना सब बानी रीती ।

प्रेम से काल रम को जीती ॥ ३ ॥
प्रेम से मन माया बस ाये ।
प्रेम से सूरत घर चढ़ाये ॥ ४ ॥
प्रेम निकारे सबहि बिकार ।
प्रेम से होवे जग से न्यार ॥ ५ ॥
प्रेम से दीखे घट में नूर ।
प्रेम रहा घट घट भरपूर ॥ ६ ॥
प्रेम की महिमा सब से भारी ।
प्रेम बिना सब पच पच हारी ॥ ७ ॥
प्रेम बिना सब थोथी कार ।
प्रेम से उतरे भौजल पार ॥ ८ ॥
प्रेम की बख़्शिश दें राधास्वामी ।

शब्द ९

राधास्वामी दाता दीनदयाला ।
दास दासी को लेव सम्हाला ॥ १ ॥
बहु दिन जग में भटका खाया ।
मेहर हुई ब चरन लगाया ॥ २ ॥

दया करी तुम दोउ पर भारी ।
बिरह अगिन चिनगी हिये डारी ॥३॥
किरपा कर उसको सुलगाओ ।
बुझने न पावे अस मेहर कराओ ॥४॥
माया घर सब फूँक जलाओ ।
मन को निकालो अधर चढ़ाओ ॥ ५ ॥
सुरत पड़ी जो इसके बस मैं ।
ताहि पहुँचाओ द्वारे दस मैं ॥ ६ ॥
हंस हंसनी सँग करे बिलासा ।
देखे अचरज बिमल तमाशा ॥ ७ ॥
यह मन कच्चा बूझ न लावे ।
कभी सीधा कभी उलटा धावे ॥ ८ ॥
भोगन की जब तरँग उठावे ।
सतसँग बचन वहीं बिसरावे ॥ ९ ॥
अनेक ख़्याल मैं रहे भरमाई ।
अनेक काज की चिन्ता लाई ॥ १० ॥
बिरह प्रेम तब जाय छिपाई ।
जग कारज का रूप धराई ॥ ११ ॥

भजन ध्यान मैं रूखा फीका ।
घट मैं रस नहिँ पावत नेका ॥ १२ ॥
हालत जब मन की होई ।
बेकली ौर घबराहट दोई ॥ १३ ॥
बाढ़ै चित मैं चैन न ावे ।
तड़प तड़प जिया बहु घबरावे ॥१४॥
स भय मन माहिँ समाई ।
दया मेहर ा खिँच गई भाई ॥ १५ ॥
फिर जब जग कारज हु पूरा ।
झलके प्रेम बिघन हु ा दूरा ॥ १६ ॥
गुरु चरनन मैं प्रीत जगानी ।
राधास्वामी दया सत्त कर मानी ॥१७॥
ऐसे झकोले ावैं जावैं ।
भी सू ा कभी प्रेम दि ावैं ॥ १८ ॥
इस बिधि   शान्ती नहिँ लावे ।
डिगमिग २ झोके ावे ॥ १९ ॥
गहरी दया करो मेरे प्यारे ।
प्रेम के खोल देव भंडारे ॥ २० ॥

निस दिन रहूँ चरन लौ लीना ।
केल करूँ जस जल सँग मीना ॥ २१ ॥
जग कारज मोहिँ अब न सतावैं ।
चिन्ता डर मोहिँ नहिँ भरमावैं ॥ २२ ॥
प्रेम धार रहे हर दम जारी ।
धुन सँग सुरत की लागे ताड़ी ॥ २३ ॥
जब चाहूँ तब रस लेउँ भारी ।
अमी धार सँग भीजूँ सारी ॥ २४ ॥
ऐसी मेहर करो स्वामी प्यारे ।
शब्द रस घट पाउँ सदा रे ॥ २५ ॥
चरन बिना नहिँ और अधारे ।
हरष हरष गुन गाउँ तुम्हारे ॥ २६ ॥
जो यह झकोले मौज से आवैं ।
बिरह जगा नशा हज़म करावैं ॥ २७ ॥
तौ चरनन मैं दृढ़ बिश्वासा ।
देव छुड़ाओ काल घर बासा ॥ २८ ॥
झीनी याद प्रेम सँग मन मैं ।

बनी रहे नहिँ भूले छिन में ॥ २९ ॥
राधास्वामी २ नित नित गाऊँ ।
चरन सरन पर बल बल जाऊँ ॥ ३० ॥

—— ०. ——

शब्द १०

राधास्वामी सत मत जिस ने धारा ।
सहज हुआ उन जीव उधारा ॥ १ ॥
राधास्वामी चरन सरन सत धारी ।
वही जीव उतरे भौ पारी ॥ २ ॥
सुरत शब्द की जो करे करनी ।
वही जीव भौसागर तरनी ॥ ३ ॥
प्रीत प्रतीत चरन में लावे ।
राधास्वामी दया सोई जिव पावे ॥४॥
सतगुरु से जो प्रेम लगावे ।
राधास्वामी चरनन जाय समावे ॥ ५ ॥
गुरु की प्रीत तुड़ावे बंधन ।
सहजहि वारे तन मन और धन ॥६॥
जग का मोह सहज में छूटे ।

तन मन बंधन बहु बिधि टूटे ॥ ७ ॥
बिरह अंग ले करे अभ्यासा ।
प्रेम पंख ले उड़े अकाशा ॥ ८ ॥
गुरु स्वरूप का धर कर ध्याना ।
ताके घट में बिमल निशाना ॥ ९ ॥
प्रीत सहित जो करे यह करनी ।
सुरत निरत निज पद में धरनी ॥१०॥
माया बिघन न लागे कोई ।
शब्द रूप में सुरत समोई ॥ ११ ॥
निस दिन घट में आनँद पावे ।
राधास्वामी की महिमा गावे ॥ १२ ॥
मेहर दया का धार भरोसा ।
चित को अपने छिन २ पोसा ॥ १३ ॥
भोग बासना मन से टारे ।
मगन रहे चरनन आधारे ॥ १४ ॥
मौज गुरू की सदा निहारे ।
रज़ा गुरू की सदा सम्हारे ॥ १५ ॥

सतगुरु रक्षक तन मन प्रान ।
सतगुरु देवें भक्ती दान ॥ १६ ॥
बिना मौज गुरु कुछ नहिं होवे ।
मौज आसरे निरभय सोवे ॥ १७ ॥
जिस को हुइ अस गुरु परतीती ।
सोइ ज़न काल करम को जीती ॥१८॥
जब कभी मन और चित घबरावे ।
घट में चरन ओर को धावे ॥ १९ ॥
और प्रार्थना करे घनेरी ।
देव सहारा काटो बेड़ी ॥ २० ॥
बहु बिधि करम किये मन साथा ।
सो सतगुरु काटें दे हाथा ॥ २१ ॥
कोइ दिन करम भोग हट जावें ।
मेहर करें जल्दी भुगतावें ॥ २२ ॥
जब गुरु में हुआ गहरा प्यार ।
शब्द भेद तब मिलिया सार ॥ २३ ॥
मन और सुरत चढ़ें ऊँचे को ।

उलट न देखेँ फिर नीचे को ॥ २४ ॥
राधास्वामी चरनन बढ़े पिरीती ।
धारे मन में दृढ़ परतीती ॥ २५ ॥
सतसंगी सब प्यारे लागेँ ।
गहरी प्रीत परस्पर पालेँ ॥ २६ ॥
दया भाव जीवन में आवे ।
सुरत अंस घट घट नज़र आवे ॥२७॥
सहज बिरोध अंग छुट जावे ।
हसद ईर्षा नाहिँ सतावे ॥ २८ ॥
मन में रहे कोई नहिँ इच्छा ।
यही आस मालिक मिले सच्चा ॥ २९ ॥
यही आस बढ़े दिन २ मन में ।
मालिक का दर्शन मिले तन में ॥ ३० ॥
काम क्रोध अस दूर बहावे ।
राधास्वामी चरन सरन लिपटावे ॥३१॥
भरम और कपट होयँ अस दूर ।
घट घट दीखे सत का नूर ॥ ३२ ॥
जागत रहे उमंग नवेली ।

प्रेम रंग रहे सुरत रँगीली ॥ ३३ ॥
दीन ग़रीबी मन मैं धारे ।
प्रीत अंग घट मैं बिस्तारे ॥ ३४ ॥
सब जीवन सँग धरे पियारा ।
यह भी लागे सब को प्यारा ॥ ३५ ॥
बाल दशा होय जग मैं बरते ।
मन मैं अकड़ पकड़ नहिँ धरते ॥ ३६ ॥
होय निःकरम सबन से न्यारा ।
राधास्वामी बिन नहिँ और सहारा ॥ ३७ ॥
संसय भरम न राखे कोई ।
मन मैं कभी निरास न होई ॥ ३८ ॥
दृढ़ बिश्वास चरन मैं धारे ।
मुक्ति आपनी होत निहारे ॥ ३९ ॥
गुरु दयाल भौ पार उतारैं ।
कुल कुटुम्ब को भी ले तारैं ॥ ४० ॥
क्या महिमा गुरु भक्ती गाऊँ ।
गुरु की दया अपार सुनाऊँ ॥ ४१ ॥

निर्मल भक्ति करे सोइ सूरा ।
काज करैं वा का गुरु पूरा ॥ ४२ ॥
ता से बार बार कहुँ बचना ।
गुरु भक्ती सम और न जतना ॥ ४३ ॥
या ते सब कारज होयँ पूरे ।
करम काट पहुँचे घर मूरे ॥ ४४ ॥
गृहस्त होय चहे हो बैरागी ।
गुरु चरनन मैं जो लौ लागी ॥ ४५ ॥
पुरुष होय चहे इस्त्री होई ।
गुरु के संग प्रीत करे सोई ॥ ४६ ॥
सतगुरु वा का करैं उधारा ।
मेहर दया से लेहिँ सुधारा ॥ ४७ ॥
सब जीवौं को चहिये ऐसी ।
गुरु सँग प्रीत करैं जैसी तैसी ॥ ४८ ॥
तौ उनका भी कारज सरई ।
भौसागर वे इक दिन तरई ॥ ४९ ॥
जग मैं जम का ज़ोर घनेरा ।
जीव करैं चौरासी फेरा ॥ ५० ॥

कोई जीव बचने नहिँ पावैँ ।
सतगुरु बिन सब भटका खावैँ ॥ ५१ ॥
बड़ भागी जाय सतगुरु भेँटे ।
चरन भेद दे घट मेँ खैँचे ॥ ५२ ॥
सुरत शब्द का भेद सुनावैँ ।
ध्यान भजन की जुगत लखावैँ ॥ ५३ ॥
सहसदल कँवल जोत दरसावैँ ।
अनहद घंटा संख सुनावैँ ॥ ५४ ॥
बंक नाल धस त्रिकुटी तीर ।
सुरत चढ़ी मिला पद गंभीर ॥ ५५ ॥
लाल सूर जहँ गुरु का रूपा ।
ओंकार पद त्रिकुटी भूपा ॥ ५६ ॥
सुन मैँ लखा चंद्र अस्थान ।
अक्षर पुरुष रकार निशान ॥ ५७ ॥
किँगरी बाजे और सारंग ।
छोड़े नीचे गरज मृदंग ॥ ५८ ॥
महासुन्न होय गई गुफा मैँ ।

सोहं धुन सुनी सुरत सफ़ा में ॥ ५९ ॥
त्तलो । रा ोई ।
ागे ुत शब्द समोई ॥ ६० ॥
त्त लो तपुर्ष निवा ।
हं करें जहँ दा बिला ॥ ६१ ॥
ागे ल पुरुष दरबारा ।
ति परे गम लो इ न्यारा ॥६२॥
ति के परे ल । धुर धाम ।
ह अपार गाध नाम ॥ ६३ ॥
हैरत रूप थाह दवाम* ।
राधा ामी का जहाँ बिसराम ॥६४॥
हरष हरष स्तुत ति गनानी ।
राधास्वामी चरन मानी ॥ ६५ ॥

— ० —

शब्द ११

उठत मेरे मन में नित्त उचंग ।
रहूँ नित गुरु के ंग नि ंक ॥ १ ॥
प्रेम । वि न । बख़्श देव ।

* सदा ।

सर्ब अँग मोहिं अपना कर लेव ॥ २ ॥
निकारो मन के सबहि बिकार ।
चुवाओ घट में अमृत धार ॥ ३ ॥
बिना तुम मेहर रहूँ कंगाल ।
प्रेम की दीजे दात दयाल ॥ ४ ॥
धरो नहिं औगुन चित्त दयाल ।
दया कर कीजे आज निहाल ॥ ५ ॥
सरन में तुम्हरे जब आया ।
सुरत और शब्द भेद पाया ॥ ६ ॥
काल से नाता टूट गया ।
करम का लेखा छूट गया ॥ ७ ॥
मौज से तुम्हरे होय सो होय ।
दूसरा करन हार नहिं कोय ॥ ८ ॥
बिनय सुनो राधास्वामी गुरु प्यारे ।
देव मोहिं चरनन आधारे ॥ ९ ॥
प्रेम रँग भीज रहे मन मोर ।
सुरत चढ़े पकड़ शब्द की डोर ॥ १० ॥

लेउँ नित घट में रस आनंद ।
फसूँ नहिं कब ही माया फंद ॥ ११ ॥
अर्ज़ यह राधास्वामी करो मंज़ूर ।
रखो मोहिं हाज़िर चरन हज़ूर ॥१२॥

—— ० ——

शब्द १२

सुरत पियारी शब्द अधारी ।
करत आज सतसंग ॥ १ ॥
बिरह अंग ले सनमुख आई ।
चित में धार उमंग ॥ २ ॥
जगत भोग से कर बैरागा ।
तज दिया माया रंग ॥ ३ ॥
रहत उदास चित्त में निस दिन ।
क्योंकर छुटे कुसंग ॥ ४ ॥
बिघन अनेक डालता काला ।
माया करती कारज भंग ॥ ५ ॥
भजन ध्यान कुछ बन नहिं आवत ।
मनुवाँ रहता तंग ॥ ६ ॥

दया करो गुरु लेव सम्हारी ।
मोड़ो या का अंग ॥ ७ ॥
चरन सरन गुरु दृढ़ कर धारे ।
घट में होय असंग ॥ ८ ॥
शब्द माहिँ नित रहे लौलीना ।
सुरत चढ़े मेरी जैसे पतंग ॥ ९ ॥
ऐसी दया करो मेरे प्यारे ।
भक्ति करूँ मैं होय निसंक ॥ १० ॥
राधास्वामी चरनन बासा पाऊँ ।
माया के उतरैं सबहि कुरंग ॥ ११ ॥

—— ० ——

शब्द १३

सुरत रँगीली सतगुरु प्यारी ।
लाइ आरती धार ॥ टेक ॥
उमँग २ कर सेवा करती ।
धर गुरु चरनन प्यार ॥ १ ॥
दर्शन करत फूलती तन में ।
चरनन पर जाती बलिहार ॥ २ ॥

सतसँग सतगुरू प्यारे लागे ।
बचन सुनत हुशियार ॥ ३ ॥
सतसँगियन से हेल मेल कर ।
देखत बिमल बहार ॥ ४ ॥
सुरत शब्द का ले उपदेशा ।
करत अभ्यास सम्हार ॥ ५ ॥
सुन सुन धुन मोहित हुई मन में ।
निरखत घट उजियार ॥ ६ ॥
राधास्वामी दया करी अब ।
लीन्हा गोद बिठार ॥ ७ ॥

——:०:——

शब्द १४

सुरत प्यारी गुरू सनमुख आई ।
आरती प्रेम सहित गाई ॥ १ ॥
करत सतसँगियन सँग प्रीती ।
धार गुरू चरनन परतीती ॥ २ ॥
नित्त गुरू सतसँग में रहे जाग ।
बढ़ावत परमारथ का भाग ॥ ३ ॥

समझ सतसँग को निज सुख रास ।
कुटँब सँग चहत चरन में बास ॥ ४ ॥
गुरू को छिन छिन कर परसन्न ।
चरन पर वारत तन मन धन ॥ ५ ॥
दीन दिल करत गुरू की सेव ।
निमाना माँगत दया गुरु देव ॥ ६ ॥
बाल को जस पित मात प्रिये ।
धरत अस राधास्वामी सरन हिये ॥ ७ ॥
चरन में खेलूँ धर बिश्वास ।
करें राधास्वामी पूरन आस ॥ ८ ॥
मेहर से देव पिता प्यारे संग ।
करूँ तुम भक्ती उमँग उमंग ॥ ९ ॥
होयँ सब बिधि मेरे कारज पूर ।
रहूँ मैं राधास्वामी चरन हजूर ॥ १० ॥

शब्द १५

भाग भरी सुत सतसँग करती ।
गुरु चरनन लिपटाय ॥ १ ॥
दर्शन करती दृष्ट जोड़ कर ।

घट मैं प्रेम बढ़ाय ॥ २ ॥
हिये मैं छिन २ बिरह जगाती ।
नैनन जल भर लाय ॥ ३ ॥
सतसँगियन से हेल मेल्ल कर ।
नित नई प्रीत जगाय ॥ ४ ॥
जगत भोग से होय उदासा ।
परमारथ मैं लगन लगाय ॥ ५ ॥
दीन अधीन करत नित सेवा ।
चित मैं भाव बसाय ॥ ६ ॥
चरन सरन राधास्वामी दृढ़ कर ।
दया भरोसा लाय ॥ ७ ॥

—:०:—

शब्द १६

झूलत घट मैं सुरत हिँडोला ।
बाजत अनहद शब्द अमोला ॥ १ ॥
धुन की डोरी लगी अधर मैं ।
सुरत निरत रहि झाँक उधर मैं ॥ २ ॥
सखी सहेली सब सँग आईं

गगन मँडल में उमँग समाई ॥ ३ ॥
अमी धार बरसत चहुँ ओरी ।
हरष हरष भीजत सुत गोरी ॥ ४ ॥
हंस हंसिनी जुड़ मिल आये ।
राग रागिनी नइ नइ गाये ॥ ५ ॥
देख नवीन बिलास मगन मन ।
ऊपर चढ़े सुन अधर शब्द धुन ॥ ६ ॥
शब्द हिंडोल बना सतपुर में ।
राधास्वामी झूलत जहाँ अधर में ॥ ७ ॥
हंसन के जहँ झुंड सुहाये ।
अचरज सोभा कही न जाये ॥ ८ ॥
जुड़ मिल दर्शन राधास्वामी करते ।
प्रीतम प्यारे के चरनन पड़ते ॥ ९ ॥
प्रेम सहित सब आरत गावें ।
छिन २ राधास्वामी पुर्ष रिझावें ॥ १० ॥

———.०———

शब्द १७

होली खेले रँगीली नार ।

सतगुरु से प्रेम लगाई ॥ टेक ॥
दीन अधीन रली सतसँग में ।
घट अनुराग जगाई ॥
प्रीत प्रतीत बढ़त चरनन में ।
दिन दिन भक्ति सवाई ॥
मेहर से काल की अटक तुड़ाई ॥ १ ॥
प्रेम रंग घट भर भर लाई ।
उमँग २ गुरु पै छिड़काई ॥
सतसंगिन सतसंगी भाई ।
सब पै रंग अधिक बरसाई ॥
भीज भीज सब अति हरषाई ॥ २ ॥
अबिर गुलाल चहुँ देस उड़ाना ।
लाल सेत आकाश दिखाना ॥
सब के मुख झलकत अब नूरा ।
बाजत घट घट अनहद तूरा ॥
समा बँधा कुछ कहा न जाई ॥ ३ ॥
ऐसा अचरज फाग रचाई ।
जग बिच भारी धूम मचाई ॥

मन माया की धूल उड़ाई ।
काल करम दोउ गये ठगाई ॥
ऐसी दया राधास्वामी कराई ॥ ४ ॥
भक्ती रीत हुई अब जारी ।
प्रेम की घट घट बरषा भारी ॥
मोह और काम रहे सब हारी ।
जीवन का सहज होत उधारी ॥
जग में फिरी राधास्वामी की दुहाई ॥ ५ ॥
राधास्वामी नाम हुआ जग परघट ।
काल करम की मिट गइ खटपट ॥
मन के मते सब रह गये सटपट ।
सुरत शब्द कारज करे झटपट ॥
राधास्वामी २ सब मिल गाई ॥ ६ ॥
जीव रहे जग सबहि दुखारी ।
मेहर से सब अब हुए सुखारी ॥
राधास्वामी ऐसी दया बिचारी ।
मन माया दोउ बाज़ी हारी ॥

राधास्वामी ब ो पार लगाई ॥ ७ ॥

—o—

शब्द १८

ाग लगी संसार मैं ।
ब ोई तपन हे ॥
जो माने गुरु बचन ो ।
ऊँचे देस चढ़े ॥ १ ॥
चढ़े जो ऊँचे देस को ।
करम भरम सब त्याग ॥
शब्द सुने निज भवन मैं ।
चरनन मैं रहे लाग ॥ २ ॥
शब्द शब्द पौड़ी चढ़े ।
निरखे जाय सत नूर ॥
राधास्वामी चरन के ।
दरशन करे हजूर ॥ ३ ॥
महा प्रेम आनंद का ।
वहि है निज भंडार ॥
जो पहुँचे वहाँ दया से ।

उसी का होय उधार ॥ ४ ॥
और सकल परपंच है।
भौजल पार न जाय ॥
चौरासी के घेर में।
फिर फिर झटका खाय ॥ ५ ॥
याते सब जिव समझ कर।
पकड़ो सतगुरु बाँह ॥
जनम जनम नहिं सहोगे।
काल करम की दाँह ॥ ६ ॥
राधास्वामी सरन लो।
गावो राधास्वामी नाम ॥
सुरत शब्द अभ्यास कर।
चढ़ पहुँचो निज धाम ॥ ७ ॥

—— ०. ——

शब्द १९

यह देह मलीन और नाशमान।
जगत कलेश और दुख की खान ॥ १ ॥
और कहीं नहिं असन अमान।

माया देस के पार चलान ॥ २ ॥
सुरत शब्द का गहो निशान ।
राधास्वामी धाम बसान ॥ ३ ॥

चरन समान

शब्द २०

धन धन राधास्वामी गाय रहूँगी ।
जग में शोर मचाय रहूँगी ॥
गुरु गुरु नाम पुकार रहूँगी ॥ टेक ॥
वाह वाह मेरे राधास्वामी प्यारे ।
वाह वाह रचना के अधारे ॥
वाह वाह गुरु परम उदारे ।
वाह वाह मेरे सत करतारे ॥
चरन पकड़ आज लिपट रहूँगी ॥ १ ॥
दया करी मोहिँ संग लगाया ।
जग जँजाल से लीन छुड़ाया ॥
बचन सुना सब भरम नसाया ।
करम धरम से लीन बचाया ॥
चरनन सेवा धार रहूँगी ॥ २ ॥

मेहर करी घट भेद सुनाया ।
मन में मेरे प्रेम जगाया ॥
रूप अनूप मेरे हिये बसाया ।
जग का भय और भाव हटाया ॥
बिमल बिमल गुन गाय रहूँगी ॥ ३ ॥

शब्द २१

भूल भरम ग़फ़लत अब छोड़ो ।
शब्द गुरू में सूरत जोड़ो ॥ १ ॥
मन का कहा न मानो कबही ।
यह भौजल में ग़ोते देही ॥ २ ॥
प्रेम प्रीत गुरु चरनन लाओ ।
राधास्वामी चरन पकड़ घर जाओ ॥ ३ ॥
अबही चेतो समझो भाई ।
धन और मान देव बिसराई ॥ ४ ॥
फिर औसर अस मिले न भाई ।
चौरासी में रहो भरमाई ।
माया देस में भटका खाई ॥ ५ ॥

शब्द २२

मेरा भीज रहा मन प्रेम रंग ।
अब चाहत निस दिन संत संग ॥ १ ॥
गुरु चरनन धावत नित उमंग ।
कर दर्शन फूलत उमँग उमंग ॥ २ ॥
सुन बचन अमी रस नित पियंग ।
सुत चढ़ती धुन सँग ज्यौँ पतंग ॥ ३ ॥
गुरु का बल हिरदे धर उतंग ।
अब काल करम सँग करती जंग ॥ ४ ॥

शब्द २३

पिरेमन सुरत आरती धार ।
चरन गुरु आई कर सिंगार ॥ १ ॥
सील की ओढ़ चदरिया सार ।
छिमा की कुरती अंग सँवार ॥ २ ॥
घेर मन लहँगा दीन बनाय ।
चित्त की चोली चमक सजाय ॥ ३ ॥
सरन गुरु हार हिये मैं डार ।

सील की माला गले सँवार ॥ ४ ॥

बचन २३

भाग १

साखी

राधास्वामी दाता दयाल हैं।
मेरे पित और मात ॥
चरनन से लागी रहूँ।
तजूँ न उनका साथ ॥ १ ॥
राधास्वामी समरथ पुर्ष हैं।
और राधास्वामी सच करतार ॥
राधास्वामी दीनदयाल हैं।
और राधास्वामी परम उदार ॥ २ ॥
वाह वाह राधास्वामी।
सुमरो भाई राधास्वामी ॥ ३ ॥

मंसा बाचा कर्मना।
सब कोसुख पहुँचाय ॥

दुख सुख ौर त्रिय ताप ॥
बंधनही से हत हैं।
जनम मरन की घात ॥ १ ॥
बंधन से बंधन टे। निरबँध हो जावे ॥
राधास्वामी दया से।
निज घर चढ़ जावे ॥ २ ॥

चलो चलो घर घंट पुकारे।
रलो मिलो ँग ाल पियारे ॥ १ ॥

क़िता

मुझे पने प्रीतम से है यह . रार।
कि जब तक है जाँ देह मैं बरक़रार॥१॥
करूँ उसके भ ीँ से हर दम पियार।
रहूँ उनको ापेके मुवाफ़ि . निहार॥२॥

पिया मेरे ौर मैं पिया की।
भेद न जानो कोई ॥ १ ॥
जो कु होय सो मौज से होई।
पिया सम्रथ करैं सोई ॥ २ ॥

ठुमरी

इतनी रज़ मेरी मानो स्वामी ।
इतनी रज़ मेरी मानो ॥
चरनन लेव लगाइ ।
देव मोहिँ ठाऊँ ॥ टे ॥
बलहीन दीन मोहिँ जानो ।
दीजे प्रेम भक्ति मोहिँ दानो ॥ १ ॥

—o—

सवाल

ी री मैं कैसे बचूँ इ न से ।
यह तो मोह रहा भोगन मैं ॥ १ ॥

—o—

जवाब

राधास्वामी दीनदया सुने हैं ।
तोहि प्रीत देवैं रनन ।
प्यारी तू ऐसे बचे इ न से ॥ १ ॥

—o—

भाग २

टेकैं व कड़ियाँ मुतफ़र्रिक़्

त मैं ार परघट है ।

इधर आवो यहाँ ढूँढो ॥ १ ॥
तेरे घट मैं छिपा बैठा ।
इधर आवो यहाँ ढूँढो ॥ २ ॥

—— ० ——

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
टुक दया बिचारो ।
मोहिँ लेव निकारी ॥ १ ॥

——

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
जग योहीँ बीता जावे ।
जल्दी से काज बना लो ॥ २ ॥

—— ० ——

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
क्योँ आपस मैं तुम झगड़ो ।
रल मिल कर सतसँग करना ॥ ३ ॥

—— ० ——

मेरे प्यारे बहन और भाई ।
जग आसा दूर निकारो ।
गुरु चरनन प्रीत बढ़ाना ॥ ४ ॥

—:o.—

मेरे प्यारे ह ौर भाई ।
दे तुम्हारा ाहीँ ।
र ब ना ॥ ५ ॥

—:o:—

मेरे ारे बहन ौर भाई ।
यह जगत रैन । पना ।
परमा चेत । ो ॥ ६ ॥

—:o:—

मेरे प्यारे बहन ौर भाई ।
भोगन की चाह तियागो ॥
घट में निज-आनन्द लेना ॥ ७ ॥

—

मेरे प्यारे बहन ौर भाई ।
ौँ जग में बिर । भरमो ।
तरमु साधन रना ॥ ८ ॥

—

मेरे प्यारे बहन ौर भाई ।
राधास्वामी रन म्हारो ।

निज घट में चरन रस लेना ॥ ९ ॥

मेरे प्यारे बहन ौर भाई ।
गुरु बचन समझ कर मानो ।
जीव ा से लेव बचाई ॥ १० ॥

मेरे प्यारे बहन ौर भाई ।
गुरु उपदेश म्हारो ।
चौरा ी फेर बचा लो ॥ ११ ॥

बचन ना जग भाव हटाया ।
द न दे मोहिं चरन ॥ १ ॥
ल ौर रम दो ।
घट में मेरे प्रेम जगा ॥ २ ॥
वाह ारे तगुरु राधास्वामी ॥

मन मेरा मुझे नचाय रहा ॥ टे ॥
मारग गुरू बतावैं ।
ो पीठ दिखाय रहा ॥ १ ॥

जगत से मन को तोड़ चलो ।
चरन मैं चित को जोड़ चढ़ो ॥ १ ॥
काल से डर कर सरन गहो ।
चरन गुरु दृढ़ कर पकड़ रहो ॥ २ ॥

—— ० ——

जैसे बने तैसे करो कमाई ।
राधास्वामी चरनन धर परतीत ॥

—— ० ——

चरन गुरु दम दम हिरदे धार ।
सरन पर डारूँ तन मन वार ॥

—— ० ——

मनुवाँ हठीला कहन न माने ।
भोगन मैं रस लेत ॥
गली गली मैं भरमत डोले ।
करे न गुरु सँग हेत ॥ १ ॥

—— ० ——

मेरे प्यारे गुरु दातार ।
चरनन पकड़ रहूँ ॥

जगत तज गुरु चर मैं भाज ।
रत ज ाई ारती ाज ॥

—o—

रत ि रोमन ाग रचाया ।
जग बिच धूम मची री ॥

—o—

न ा ीना र हथियार ।
ोह मद ले ाड़ नि ार ॥

ी प्यारे क्यों नहिँ नो पु ारी ।

स्वामी प्यारे बही मेहर रा ो ॥

स्वामी प्यारे बही लेव धारी ॥टे ॥
मन इंद्री मेरे चुप न रहावें ।
चल रहत दा री ॥ १ ॥

गहो रे चरन गुरु धर हिये प्रीती ।
ारो रे रन रु धर परतीती ॥१॥

तगु ारे ने रचाया ।

जग फाग रँगीला हो ॥

सतगुरू प्यारे ने सुलाये ।
पंच दूत दिवाने हो ॥

सतगुरू प्यारे ने बुझाई ।
जग तपन करारी हो ॥

सतगुरू प्यारे ने बचाई ।
जम से सुरत हमारी हो ॥

सतगुरू प्यारे ने जगाई ।
मन में प्रीत नवीनी हो ॥

कस पिया घर जाऊँ री ।
सँग मनुवाँ अनाड़ी ॥

कस जायँ री सखी ।
मेरे मन के बिकारा ॥

गुरू प्यारे चरन पर आज ।
मनुवाँ वारूँगी ॥

गुरु प्यारे की आरत सार।
गाऊँ उमँग उमंग ॥

गुरु प्यारे का ले बल हाथ।
करम पछाड़ूँगी ॥

गुरु प्यारे का धर बिश्वास।
मन से जूझूँगी ॥

गुरु प्यारे के नित गुन गाय।
प्रेम जगाऊँगी ॥

सुन री सखी रात प्यारे राधास्वामी।
मोहिँ सुपने मेँ अँगवा लगाय रहे ॥

दरस आज दीजिये।
मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥
मेहर अब कीजिये।
मेरे राधास्वामी प्यारे हो।
सरन मेँ लीजिये।

मेरे राधास्वामी प्यारे हो ॥

—o—

बार बार भूलन हार ।

तगुरु दातार ॥

—

ीरी घर जाऊँगी ।

तगुरु ँग हिये धर ार ॥

—

ीरी र ाने दे मोहिँ ।

तगुरु ँग परदे ॥

—

न तू भ ले बारम्बार ।

राधा ामी ा ार ॥

—

राधा ामी सदा दाई ।

मिरा तिनही गत पाई ॥

ीला गम ार ॥ १ ॥

—o—

त ंग बिना जिया तरसे ।

मैं तो ाय पड़ी ोरन के नगर ॥

—•—

भक्तन के स्वामी काज सँवारे ।
काल जाल से जीव निकारे ॥
धर सतगुरु औतार ॥

—o—

सुरतिया प्रेम जगाय रही ।
प्रेमीजन का कर सतसंग ॥

—o—

सुरतिया बिनती धार रही ।
लेव अब सब को चरन लगाय ॥

—o—

सुरतिया हैरत रूप भई ।
गुरु सन्मुख द्रष्टी तान ॥

सुरतिया वाह वाह करती ।
गुरू की महिमा गाय रही ॥

सुरतिया हँस हँस गावत नित्त ।
गुरू की आरत प्रेम भरी ॥

सुरतिया झुरत रही मन माहिँ ।
प्रेम की घट में देख कसर ॥

—o—

रतिया घट ँ धावत नित्त ।
रन ो मी गगरी ॥

—o—

रति ा धार बहाय रही ।
तगुरु ा द ॅन पाय ॥

—o—

रतिया बचन गुरू के जाँच ।
गन होय तसँग नित करती ॥

—o—

रतिया हरष रही न ाहिँ ।
गुरू के न न नये बचना ॥

———

रति ा बिग रही ।
हर द गुरू सेवा धार ॥

—o—

रतिया धार ब ंती रंग ।
रन ाई ारत गुरू दरबार ॥

—o—

रतिया बिनती रत रही ।
रो गुरू मेरा ा ुधार ॥

—.o.—

सुरतिया नींद भरी ।
नित सोवत टाँग पसार ॥

मोहिँ नाच नचावे मन ठगिया ।
मेरा अब कैसे छुटन होय दइया ॥

पिया का दरस कस पाऊँ सखी ।
कोइ जतन बता दो री ॥

बिन दर्शन मन तड़प रहा ।
कस तपन बुझाऊँरी ॥

बिन दर्शन मोहिँ चैन न आवे ।
कस मन समझाऊँरी ॥

बिन दर्शन मोहिँ कुछ न सुहावे ।
कस जग बिच रहना होय ॥

बिन द न बि ल रहूँ ।
न ा न लावे हो ॥

बिन द न चित रहे उदा ा ।
हिँ न न पावे हो ॥

भाग भरी सुत जब अनोखी ।
सेवा धार रही ॥